MOTION OF THANK OF PRESIDENT'S ADDRESS—Contd.

श्री धर्म पाल : मैडम डिप्टी चेयरपरसन, मैं जिक्र कर रहा था कि आजादी के बाद देश ने 41 साल मे जो उपलब्धिया की हैं, चाहे वह एग्रीकल्चर हो, इंडस्ट्री हो, चाहे डिफेंस प्रोडक्शन की बात हो, साइंस और टैक्नॉलाजी की हो, चाहे विदेश नीति के जरिय भारत का मुकाम दुनिया में बढ़ाने की बात हो, इस देश ने काफी तरक्की की है और उसी प्लांड डेवलपमेंट का नतीजा है कि अब हमारी इकॉनॉमिक स्थिति इतनी मजबूत है कि पूरी पिछली शताब्दी में जितना भयंकर सूखा नहीं पड़ा, वह पड़ा और हमारे प्रधान मंत्री जी ने, जिन प्रदेशों में भी सूखा पड़ा, खुद जाकर मौके पर जायजा लिया और कैबिनेट की एक सब-कमेटी बनाई ताकि जो सूखा-पीड़ित है उनको राहत दी जा सक । मुझ याद है कि राजस्थान और गुजरात दो प्रदेश थे जहां सबसे बड़ा सूखा था । 800 से भी ज्यादा करोड़ रुपये राहत के लिये दिये गये । एसेट्स बने और लोगों को रोजगार मिला और हमारे किसान जो हैं उनकी हालत भी सुधरी । सूखे के बावजूद हमारा जो ग्रोथ रट था वह 3.6 प्रतिशत रहा और पिछले चार वर्षों में 5 प्रतिशत से ज्यादा और आने वाली योजना में लक्ष्य 6 प्रतिशत से भी ज्यादा रखा है ।

जवाहर लाल जी ने जहां जम्हूरियत को मजबूत किया वहां इंदिरा जी ने इस देश में समाजवाद को मजबूत करने के लिये कदम उठाए । हमें याद है कि बैंक नेशनलाइजशन के जरिये यहां के करोड़ो गरीब आवाम, चाहे वह कोई टेक्सी वाला हो, रेहड़ी वाला हो या कोई और जिसको कर्जा लेना हो, पहले चन्द लोग कर्जा ले सकते थे, बैंक से उनकी इकानॉमिक पोजीशन सुधरी और 20 नुकाती प्रोग्राम के जरिये पिछड़ी जातियों पर, पिछड़े इलाकों क विकास पर ध्यान दिया गया , वहां हमारे युवा प्रधान मंत्री ने एक नई दिशा दी और इकोनॉमिक ग्रोथ विद सोशल जस्टिस के लिय सातवी योजना दश के सामने रखी और उसको मजबूती मे आगे बढ़ा रहे है । हम दखते है कि आई० आर०डी०पी०, आर०एल०ई०जी०पी०, एन० आर०ई०पी० के जरिये से हमन इस देश में दो करोड़ से भी ज्यादा कुनबों को गरीबी की रखा से ऊपर उठाया । बैंकों के साधनो से उनको कर्जे दिये गये । इतने भयंकर सूख के बावजूद भी प्रोडक्शन बढ़ा, चाह कपास हो, चाहे आयलसीड्स हो या सीरियल्स की बात हो, हमारी पैदावार बढ़ा है और पिछले दो सालो में 50 प्रतिशत से भी ज्यादा निर्यात हमारा विदशों को हुआ है ।

महोदया, इस देश में सत्ता संभालते हुये प्रधान मंत्री न कहा कि भारत के आईन के अंदर रहत हुये बातचीत से हम सभी मसलों को हल करगे, कंफ्रंटशन से नहीं । इसी के अनुसार 1985 में असम का समझौता हुआ । 1986 में मिजोरम का समझौता हुआ और पिछले साल दार्जिलिंग का समझौता हुआ और पूर ईस्टर्न इंडिया के लोगों को मेन धारा में लाए और आज मुख्य धारा में मिलकर वे लोग दश के डेवलपमट के लिये पूरा हिस्सा अपना अदा कर रह है ।

महोदया, प्रधान मंत्री जी ने युवा वर्ग की तरफ तवज्जह दी और उसी का नतीजा है कि हमारी पापुलेशन में हर वर्ष युवाओं की संख्या बढ़ती जा रही है । इसी वजह से मुल्क के डवलपमेंट में युवाओं को पूरा रोल देने के लिये हमने वोटिंग एज 21 वर्ष से घटा कर 18 वर्ष कर दी । इसी तरह स महिला वग जो कि कमजोर वर्ग है समाज का, उसके लिय भी नेशनल पर्सपेक्टिव प्लान बनाया और ऐसी योजनायें बनाई है जिनसे 50 प्रतिशत हमारी आबादी का जो हिस्सा है वह योजनाओं में हिस्सा ले सके ।

इसी क साथ-साथ हमने पंचायती राज को मजबूत करने के लिये हमने न केवल कांग्रेस पार्टी मे बल्कि सारी पार्टियों को बुलाकर उनसे बातचीत की और उनका मशविरा लिया । सब चीफ मिनिस्टर साहबान को वे बुला रहे है और शायद वह बिल इसी सशन में आ जाए । इसकी योजनायें दिल्ली में ही नही स्टटो की राजधानियो में ही नही बल्कि डिस्ट्रिक्ट और ब्लॉक लेवल पर जायगी ताकि उनकी इच्छाओं के अनुसार हम प्लान बनायें और गांवों के लोग, जिलों के लोग और उनके नुमांइदें देश की तरक्की में भाग ले सकें ।

[श्री धर्म पाल]

सके अलावा विदेश नीति में भारत का मकाम दुनिया में बहुत बढ़ा है। चाहे कंपूचिया के समझौते की बात हो चाहे अफ़गानिस्तान में रूसी फौजों की वापसी का मामला हो, उनमें हमारे प्रधान मंत्री ने जो रोल अदा किया वह सारी दुनियां को मालूम है। इसी तरह से चाइना में उन्होंने बातचीत की। 1954 के बाद व पहले प्रधान मंत्री हैं जो वहां गए और उनसे अपनी टेक्नालाजी में, साइंस में और कारोबार के बारे में समझौता किया। बार्डर के मामलों पर संयुक्त दल बने जो विचार करके बार्डर का जो हमारा डिस्प्यूट है उसको हल करेंगे क्योंकि हमारी आबादी दुनिया का एक तिहाई है। भारत और चाइना ये दोनों जाइंट्स अगर मिल जाएं और हमारे 8 डिवीजन की फौज जो बार्डर पर लगी हैं वह वापस हो सके तो जो हमारा खर्चा वहां पर हो रहा है वह पैसा बेरोजगारी को दूर करने में या डेवलपमेंट के कामों में लग सकेगा।

महोदया, पाकिस्तान के इस्लामाबाद में उनकी जो बातचीत बेनजीर भुट्टो के साथ खुलकर हुई उससे हमारा आपसी विश्वास बढ़ा है। इससे लोगों का आदान-प्रदान होगा और हमारे संबंध बढ़ेंगे पाकिस्तान के प्रधान मंत्री की जो दिक्कतें हैं वह हम समझते हैं। पूरा कंट्रोल उनका वहां पर अभी नहीं है। एक तरफ फौज है, दूसरी तरफ लोग हैं। कुछ बातों में हमें समझौता करना पड़ता है। हम समझते हैं कि पंजाब में जो ट्रेनिंग हो रही है, हमारे काश्मीर के नौजवानों को जो ट्रेनिंग दी जा रही है और फिर वापस उनको काश्मीर में भेजा जा रहा है, वह बंद होगा। दिक्कतें हैं प्राइम मिनिस्टर बेनजीर भुट्टो की। हम समझते हैं, सोचते हैं और यह विश्वास है कि दो हुकूमतों के दरमियान, दो लीडरों के दरमियान जो बात हुई है उससे हालात सुधारेंगे। मेरी रियासत जम्मू-काश्मीर है, पिछड़ी हुई रियासत है, पहाड़ी रियासत है। यह तीन जंगों का शिकार हुयी है। जब हम तरक्की करते हैं तो उसकी इकोनोमी शैटर हो जाती है हमलों की वजह से। एक बात की मुझे खुशी है कि हमारा एनुअल प्लान 520 करोड़ का है। इसके लिये मरकजी सरकार का शुक्रियादा करता हूं। प्राइम मिनिस्टर का पैकेज प्रोग्राम वहां है। यह कहा जाता है कि उसी प्लान से पूरा करें। मेरा जोरदार तरीके से यह कहना है कि ओवर एंड अबाव जो एलोकेशन हो जम्मू-कश्मीर स्टेट को वह 520 करोड़ से अलावा होना चाहिये ताकि हम तरक्की की दौड़ में आगे बढ़ सकें।

एक और मसला जो हमारे लोगों को चिंतित करता है, हमारी सरकार को, चुने हुये नुमाइंदों को वह यह है कि हमारे साथ ही हिमाचल प्रदेश हैं। वहां 90 परसट ग्रांट मिलती हैं और 10 परसेंट लोन है जबकि जम्मू-काश्मीर में 70 फीसदी लोन है और 30 परसेंट ग्रांट है। हमें कहा जाता है कि कोई फर्क नहीं पड़ता यह तो फिगर वर्क है। लेकिन 1900 करोड़ के करीब जम्मू-कश्मीर का कर्जा है और हमें 250 करोड़ से ऊपर का इंटरेस्ट देना पड़ता है। इसका हमारे प्लान पर असर पड़ता है। प्लान गैप इस साल 100 करोड़ से ज्यादा है। स्टेट के बजट का घाटा 103.84 करोड़ है। हमारी अपनी आमदनी 262 करोड़ है। मुलाजिमों की तनख्वाह 350 करोड़ है। इस स्थिति में यहां इन्टरनेशनल कंसपिरेसीज होती है, यह जंगों का शिकार होता है, आने-जाने के साधन वहां नहीं हैं, रल सिर्फ जम्मू तक ही है, ट्रांसपोर्टेशन का खास इंतजाम नहीं है, वहां पैदावार फ़ूट की होती है लेकिन हम ला नहीं सकते क्योंकि रास्ते में पैरिश हो जाती है। मेरी जोरदार आवाज होगी कि जम्मू-कश्मीर को और साधन दीजिये। कम से कम प्राइम मिनिस्टर के स्पशल प्लान में से ओवर एंड अबाव फंड एलाट किया जाए।

एक बात और इस स्टेट के मुतल्लिक कहना चाहूंगा। स्थिति बड़ी गम्भीर है। मट्टू साहब यहां बैठे है। सवाल यह है कि वहां तो एक्ट्रीमिस्टस आऊटफिट थे। तो जम्मू कश्मीर लिबरेशन एक और दूसरा पीपल लीग। हमारे नौजवान बेकारी की वजह से क्योंकि साधन नहीं है, परशान है। मुझे शिकायत है कि सन्ट्रल सर्विसेज में चाहे सी०आर०पी० हो, बी०एस०एफ० हो, टेलीकम्यूनीकेशन की बात है, रेलवे

की बात हो और चाहे वहां सेंट्रल प्रोजेक्टस लगाने की बात हो इसके लिये मिनिमम इन्वेस्टमेंट जम्म-कश्मीर स्टेट में सिर्फ 0.3 परसेंट है टोटल इन्वस्टमेंट इन द कंटरी । मेरा कहना यह है कि यहां इस किस्म की बातें हो रही हैं। यहां सक्सैसनिस्ट फार्सेज है, एन्टी नेशनल फार्सेज है, मामूली बात पर भड़काया जाता है । वहां हालात पैदा की जा रही है कि कम्युनल हैटरेड हो। जो कश्मीर की रिवायत रही है, हिन्दू, मुस्लिम और सिखों के एक रहने की। उसमें कोशिश यह हो रही है कोई वहां एक न हो । जो लोग वहां बैठे हुए हैं वे बिजली की कमी का बहाना बनाकर एक प्रोग्राम बना लेते हैं।

जिया टाईगर्स और अल जंग एक्सट्रीमिस्ट आऊट फिट वहां बना है और अलजंग है । इन्होंने 22 फरवरी को पोस्टरवार शुरू कर दिया । ट्रेडर्स को धमकाना शुरू कर दिया कि आप हड़ताल करेंगे । रिपब्लिक डे पर प्रोटेस्ट डे मनायेंगे । यह पहली बार जम्मू-कश्मीर में हुआ । मकबूल बट्ट साहब जो बैंक मैनेजर के कत्ल के इल्जाम में पहले लन्दन रहते हैं और फिर पाकिस्तान चले गये जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट के थे, उनको आज से 5 साल पहले 11 फरवरी को फांसी हुई थी। पहली बार पांचवें साल 11 फरवरी के पहले हालात बिगड़ गये । हड़ताल हुई, वायलेंस हुई । कोई न कोई बहाना ढूंढा जाता था । चाहे अनाज अच्छा न मिले, बिजली की कमी हो । मैं इस सन्दर्भ में कहूंगा कि वहां स्पेशल हालात है । कुछ लोग वहां बैठे हुए हैं जो अमन को दरहम-बरहम करना चाहते हैं । जो चाहते है वहां रिवायत जो रही है अमन की, भाई चारे की उनको तोड़ा जाये । महात्मा गांधी जी ने भी कहा था कि कश्मीर में मुझे रोशनी की किरणें नजर आती हैं भाई चारे की । आज वहां फोर्सेस का माहोल है । पाकिस्तान से सैंकड़ों पढ़े-लिखे नौजवान ट्रेनिंग लेकर आ गये हैं । 80 के करीब पकड़े गये हैं । काफी असला पकड़ा गया है। चिदम्बरम साहब काफी असला अभी भी कश्मीर में है। एक तो इंटेलिजेन्स नेटवर्क को सतर्क किया जाय । काश्मीर सरकार के पास भी अपने साधन हैं उनकी अपनी इंटेलिजेन्स है, लेकिन सेन्ट्रल एजेंसीज जितनी हैं उनको स्ट्रेन्थन किया जाये, मजबूत किया जाये। वहां की हालात को नजर में रखा जाय। वहां पर हालात खतरनाक हैं । आपकी यह जिम्मेदारी बनती है कि आप स्टेट सरकार को हालात से बाखबर रखें ऐसी कोशिश हो रही है कि जो नवजवान वहां पर आ गये हैं वे और असला लायें इसलिए बार्डर पर निगरानी रखने की जरूरत है । इस वक्त वहां पर कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस, दोनों पार्टीज की सरकार है । वहां पर मिलकर सेकूलर फोर्सेस को मजबूत करने की जरूरत है मजबूती खाली बातों से नहीं आएगी । वहां की प्रोबल्म पढ़े-लिखे लोगों की, खासकर मुस्लिम नवजवानों की है जिनको उकसाया जाता है कि आपको सेन्ट्रल सर्विसेज में कुछ नहीं दिया जाता है । आप वहां पर फैक्ट्रीज खोलिये, इंडस्ट्रीज खोलिये लोगों को सेन्ट्रल सर्विसेज में भी लिया जा सकता है। उसके आप स्पेशल रेक्रूटमेंट कर सकते हैं, जम्मू-काश्मीर के नवजवानों सी० आर० पी० एफ० में दूसरी फोर्सेज में रखा जा सकता है । आप लोगों को साधन दीजिये जिससे उनकी बेरोजगारी दूर हो । बेरोजगारी सिर्फ जम्मू-काश्मीर में ही नहीं, मैं मानता हूं कि पूरे देश में है, लेकिन इस समस्या का पूरे पहचान पर दूर करने की जरूरत है । हमारे प्रधान मंत्री जी बेकारी पर प्रहार कर रहे हैं और वे बेरोजगारी और अनइम्प्लायमेंट दूर करने और गरीबी दूर करने पर जोर दे रहे हैं । हम अपना आठवां मंसूबा बनाने जा रहे है। मैं चाहता हूं कि इस योजना में हम बेकारी का खात्मा कर दें और पिछड़े इलाकों और पिछड़ी जातियों को ऊपर उठायें, उनको आगे बढ़ायें । इस संदर्भ में मैं यह कहना चाहूंगा कि जम्मू-काश्मीर में लोगों को भड़काया जाता है कि तुमको सेन्ट्रल सर्विसेज में भर्ती नहीं किया जाता है, आई० ए० एस० और आई० पी० एस०

[श्री धर्म पाल]

में नहीं लिया जाता है । वहां पर सेन्ट्रल प्रोजेक्टस कम हैं । वहां पावर प्रोजेक्ट हैं, लेकिन फिर भी लोगों को बिजली नहीं मिलती है । वहां पर सरकार ने थोड़ा टेरिफ बढ़ाया तो लोगों को भड़काया जाने लगा कि बिजली तो देते नहीं है, और टेरिफ बढा देते हैं वहां जो प्रो-पाक एलीमेंट है एन्टी नेशनल एलीमेंट है, सोसनिस्ट एलीमेंट है वह इसका फायदा उठाते हैं इसलिए आप ऊरी की जो प्रोजेक्ट है। उसको फन्ड दीजिए और उसको पूरा कीजिए । दुलहती की बात भी की जाती है । वह तीन-चार साल से पहले पूरी नहीं हो सकती है । पहले किसी फ्रेंच फर्म से नेगोसिएशन चल रही थी, लेकिन अब कहा जा रहा है कि किसी एस्ट्री-जर्मन फर्म की आफर आ रही है । लाइन बिछाने के लिए रशिया से एग्रीमेंट किया गया है । उनको भी पूरा होने में चार साल लग जायेंगे । ऊरी की प्रोजेक्ट बहुत अहम है और उसी तरह से बगलियार का भी सवाल है । सलाल का सेकेण्ड फेज है उसके लिए भी पैसा चाहिए । जब हम रेल बिछाने की बात करते हैं तो रेलवे बजट पर अगर पार्टी ने हमें बोलने का मौका दिया तो हम जरूर अपनी बात कहेंगे । यह ठीक है कि मध्य प्रदेश में रेलें बिछाई जा रही हैं और प्राय: सभी रेल मध्य प्रदेश से होकर गुजरती हैं, इसलिए वहां पर सड़कें बननी चाहिए, रेलें बननी चाहिए, डबल ट्रेक बनने चाहिए । लेकिन हम भी यहां पर अपने प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं । मिनिस्टर पूरी कंट्री के लिए होते हैं, किसी एक रियासत के नहीं होते हैं । पूरे देश को उनको देखना चाहिए । यह ठीक है कि आपने सुपर फास्ट ट्रेनें वहां हफ्ते में चार दिन तक बढ़ा दी हैं और एक, जो अहमदाबाद से दिल्ली तक चलती थी, उसको जम्मू तक बढ़ा दिया है, लेकिन सिर्फ 12 करोड़ रुपये दिये गये हैं। उधमपुर वाली लाइन को भी पूरा करना है । अगर आप वैली तक रेल ले जाते तो अच्छा होता क्योंकि प्रचार यह किया जाता है, कि जम्मू तक तो रेल आती है, लेकिन वैली में नहीं लाई जाती है । अगर वैली तक रेल पहुंचाई जाय तो उसकी पोलिटिकल सिगनीफिकेन्स भी है । प्रधानमंत्री जी ने उधमपुर की लाइन को पूरा करने की बात कही थी । लेकिन सात करोड़ से 12 करोड़ कर देने से सिर्फ तीन किलोमीटर लाइन बनेगी । इसलिए अगर में अनइम्प्लायमेंट को दूर करना है, सेकुलर और डेमोक्रेटिक फोर्सेज को मजबूत करना है तो हमें जम्मू-काश्मीर को साधन भी देने होंगे और तभी वहां का विकास हो सकता है और जो नेगेटिव पोलिटिक्स है उसको जवाब दिया जा सकता है । वे तेजी से काफी सतर्क हो गये हैं और वे नौजवानों को गुमराह कह रहे है, उनको ट्रेनिंग दे रहे और वहां पर एक्सप्लोसिव सिचूयेशन हो रही । इस तरफ देखना है और इसका ईलाज करना है ताकि यह न हो । दूसरी तरफ, वहां पर जो सरकार है उसको भी मजबूत करना है। उसको अधिक सहायता दी जाय ताकि वहां के मसायल, चाहे बेकारी और वीकर सेक्शन के मसायल हों चाहे शैड्यूल्ड ट्राइब्स और शैड्यूल्ड कास्ट के मसायल हों उनको हल किया जा सके । (समय की घंटी) मुझे खुशी है कि हमारी सरकार के हेड राजीव गांधी है । उन्होंने देश से गरीबी दूर करने और बेरोजगारी खत्म कर के लिये हिम्मत से कदम उठाये है । उन्होंने नौजवानों को डेवलपमेंट प्रोसेज में इन्वाल्व किया है । इलेक्शन कानूनों में परिवर्तन करके गरीब लोगों को वोट देने की सुविधा दी है, बूथ पर कब्जा करना उन्होंने एक आफस बनाया है । रिलीजन को पालिटिक्स से अलग करने के लिये इन इंस्ट्रीट्यूशंस का मिसयूज न हो, इसका भी उन्होंने कानून बनाया है । इस तरह के और भी कदम उठाये जाने चाहिये ।

महोदया, प्राइस राइज से गरीब आदमी को बड़ी मुश्किलें पेश आ रही हैं । कीमतें बढ़ रही हैं । इसके लिये जो हमारा पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम है उसको मजबूत करने की जरूरत है । दूर-दराज, पहाड़ी और पिछड़ इलाकों में

[डा० रत्नाकर पांडेय]

और 2-3 दिन के भीतर आई० आई० सस्ते दामों पर ये चीजों लोगों को मिलनी चाहिए यह भी एक अहम मसला है जिसकी तरफ ध्यान देने की जरूरत है।

मै एक बात और कहना चाहता हूं। हम आगे बढ़ना चाहते हैं और चाहते है कि देश के आईन के अन्तर्गत चाहे वह पंजाब का मसलाह हो या और मसले हों उनका हल होना चाहिये। प्राइम मिनिस्टर साहब ने कुछ कहा था और कहा यह था कि एक लीडर हैं अपोजीशन के जो उनकी मदद करते हैं। इसमें क्या
१ है। मैं कहता हूं कि हां, है। हमारे हाउस के मेम्बर हैं वे मौजूद नहीं हैं, श्री जेठमल नी जनता पार्टी के हैं जो खालिस्तान की हिमायत करते हैं। हमारे चौधरी देवीलाल हैं, चीफ मिनिस्टर हरियाणा, के वे जाते हैं कोयम्बतूर की जेल में और प्रकाश सिंह बादल से मिलते हैं, प्लान बनाते हैं, तलवंडी जी को भी उन्होंने बुलाया है। वे कह क्या रहे हैं? चौधरी साहब कह रहे हैं कि इलेक्शन से पहले समझौता मत करो। अभी पंजाब का मसला हल नहीं होना चाहिए। वी० पी० सिंह करेगा। कौन करेगा? वी० पी० सिंह को हम भी जानते हैं। जो बजट उन्होंने पेश किये वे एन्टी पीपुल बजट पेश किये। जो बजट आज आ रहा है इसमें लोगों को राहत मिलेगी और वही वी० पी० सिंह आज कह रहे हैं कि सरकार का एकानामिक पालिसी ठीक नही है। वे यहां रहे और सरकार से निकलने के बाद भी वे यह कहते रहे कि मैं हमेशा कांग्रेस का झंडा लेकर चलना रहूंगा-तो वे आयेंगे हल करने के लिये पंजाब के मसले को। मुझे दुख इस बात का है --चुनी हुई सरकार डी०एम० के० की है। लोगों ने जो फैसला दिया है उसका हम स्वागत करते हैं। लेकिन वह भी अपनी पावर का मिसयूज कर रहे हैं। सेंट्रल गवर्नमेंट को पूछे बगैर उन्होंने चौधरी देवी लाल की मुलाकात बादल जी से कराई, बरनाला जी से कराई और तलवंडी को भी बुलाया है कि अकाली दल नेशनल फ्रंट के साथ मिल जाय। यह उनकी पालिटिक्स है। वे पावर हंग्री हैं। वे पंजाब का मसला हल होना देना नहीं चाहते। वे करपशन की बात करते है। चिमन भाई को उन्होंने गुजरात जनता दल का हैड बनाया है। वे पहले वहां पर चीफ मिनिस्टर थे। लेकिन जब उन पर करपशन के चार्जेज लगे तो इंदिरा गांधी ने उनको हटा दिया। बीजू पटनायक हमारे साथी थे, उनके करपशन के बारे में सब जानते हैं वे उडीसा जनता दल के हैड बने हैं। हमारी रियासत में भी कुछ लोग लीडर बने है दुनिया उनके बारे में जानती है। हरियाणा में क्या हालत हैं? आन्ध्र प्रदेश में जो बने हैं उन पर कितने इल्जाम हैं। इसीलिए जब प्राइम मिनिस्टर साहब करपशन को दूर करना चाहते हैं तो वे उनका विरोध करते हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि कांग्रेस का कोई बदल नहीं है। कोई भी पार्टी ऐसी नहीं है, कोई ऐसी जमात नहीं है जो कांग्रेस की जगह ले सके, जो लोगों को इकठ्ठा रख सके। देश की एकता और अखंडता को बरकरार रख सके, देश के डेवलपमेंट को आगे बढा सके, वीकर सैक्शन, शैड्यूल्ड कास्ट और शैड्यूल्ड ट्राइब्स, पिछडी जातियों, पिछडे लोगों के साथ जो भेदभाव है, जो असमानता है, जो डिसक्रिमिनेशन है उसको खत्म कर सके। मैं समझता हूं कि कांग्रेस के सिवाय इसका कोई हल नहीं है। ये लोग ख्वाबों की दुनिया में बैठे हैं और नो के करीब तो इनके प्राइम मिनिस्टर बन चुके है जब जनता सरकार शासन में आई तो जो डैवलपमेंट का हमारा प्रोसेस था उसको बहुत धक्का लगा। 28 महीने में जनता सरकार ने रोलिंग प्लान बनाया कि हर साल रोल होगा। उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं को पीछे छोड दिया, डैवलपमेंट पीछे हो गया और हमारी इंटरनेशनल प्रेस्टिज में कमी आ गई। हम इन लोगों को जानते हैं और जानते हैं कि ये सत्ता के भूखे लोग हैं, पावर हैग्री हैं। इनकी न कोई पालिसी है और न कोई विदेश नीति है। और राजनीति यह है कि हमें सत्ता मिले, यह कभी नहीं होगा। यह जाने पहचाने चेहरे हैं नया कोई नहीं है। **(समय की घंटी)** जो मुझे इस एड्रेस पर

जो सुकुल जी ने शुक्रिया की तहरीफ रखी है उसका मैं समर्थन करता हूं और फिर यह दोहराना चाहता हूं कि कांग्रेस के बगैर और हमारा लीडर राजीव गांधी जिसकी प्रेस्टिज सारी दुनिया में है इस देश की तो बात नहीं जो इस देश को आगे ले जा रहा है मुझे उम्मीद है कि आने वाले चुनाव में पूरी ताकत से फिर हमारी पार्टी, हमारे नेता उभर कर सामने आयेंगे और इस देश की प्रेस्टिज को और बढाने का काम करेंगे । शुक्रिया ।

डा० रत्नाकर पांडेय (उत्तर प्रदेश) : माननीया उपसभापति महोदया, आपका आदेश हो तो मैं आगे आ जाऊं ।

उपसभापति : आपकी आवाज तो इस सदन के बाहर भी बहुत दूर तक जाती है । (**व्यवधान**)

डा० रत्नाकर पांडेय : यह सब आपके आशीर्वाद का प्रतिफल है । (**व्यवधान**) माननीया उपसभापति महोदया, मैं कृतज्ञ हूं आपका । संसद के समक्ष 21 फरवरी, को भारत के राष्ट्रपति महामहिम वेंकटरमन जी ने जो अभिभाषण दिया है और हमारे सदन के माननीय सदस्य पंडित पशुपति नाथ सुकुल जी ने 23 फरवरी, को राष्ट्रपति के अभिभाषण पर राज्य सभा के सदस्यों को कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए जो प्रस्ताव रखा है उसके संदर्भ में अपने समर्थनमय विचार प्रस्तुत करना चाहता हूं । राष्ट्रपति जी ने स्पष्ट कहा है कि इस वर्ष जवाहरलाल नेहरू का शताब्दी वर्ष है और स्वतंत्रता संग्राम में स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत के निर्माण के प्रारम्भिक वर्षों में उनकी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है । यह देश हजारों वर्षों तक गुलाम रहा और गुलामी से बढकर के कोई पीड़ा नहीं होती है और दरिद्रता से बढ़ कर कोई दुख नहीं होता है । 'पराधीन सपनेहु सुख नाहि,' स्वप्न में भी सुख नहीं रहता है दास को । भारत को जिन नौनिहालों ने स्वतंत्र किया उन में गांधी जी के नेतृत्व में जवाहरलाल नेहरू सारथी के रूप में जिस रूप में उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता का बिगल बजाया और मोतीलाल नेहरू जैसे व्यक्तित्व से जो उनके पिता भी थे 'सुराज' होगा कि 'स्वराज' होगा सन् 1923 ईस्वी की कांग्रेस अधिवेशन में मतभेद किया और सारे देश ने स्वराज्य, सुराज नहीं, मोती लाल जी सुराज चाहते थे और जवाहर लाल नेहरू ने स्वराज्य किया और वह स्वराज्य स्थापित हुआ और उस स्वराज्य के प्रथम प्रधान मंत्री के रूप में उन्होंने भारत के निर्माण के लिए जो औद्योगिक तीर्थस्थल स्थापित किया जहां सुई और बटन तक विदेशों से आते थे, हमारा सारा कच्चा माल उत्पादित हो कर के विदेशों में चला जाता था और वहां से स्वरूप लेकर हमारे देश में आयात होता था उस सच को उन्होंने बन्द करने की कोशिश की और बडे बडे औद्योगिक तीर्थस्थल बनाए गए है । उन्हीं के मार्ग पर लाल बहादुर शास्त्री जी चले लेकिन विधाता को मंजूर नहीं था और वे कालकवलित हुए । उनका "जय जवान जय किसान" का नारा इस देश के इतिहास में लिखा जाएगा । उनके बाद इन्दिरा जी आईं । इन्दिरा जी, मैं इस सदन में फिर कहना चाहता हूं कि अवतारी शक्ति थीं और ऐसी अवतारी शक्ति थीं जिसने इस देश के लिए अपने प्राणों की कुर्बानी कर दी । इन्दिरा जी ने नेहरू जी द्वारा दिखाए गए रास्ते पर चल कर और दुनियां की, देश की, गरीबों की जो समस्याएं हैं उन पर ध्यान रख कर जो कुछ किया वह इतिहास तो बताता ही है । उन्होंने भूगोल तक को मिटा दिया।

और नये देश बंगलादेश का निर्माण
3 P.M. कराया । बैंकों का राष्ट्रीयकरण कराया ताकि कुछ मुट्ठीभर पूंजीपतियों तक बैंक सीमित न रहे । बैंकों की धनराशि गरीब जनता तक पहुंचे और भारत के उत्थान तथा गरीबी रेखा से नीचे जिंदा रहने वालों के लिए उपलब्ध हो सके ।

राजीव गांधी जी ने कभी इच्छा प्रकट नहीं की कि हमें इस देश का प्रधान मंत्री बनाओ । लेकिन जब इंदिरा गांधी का शव पड़ा हुआ था, जो खालिस्तान की मांग करने वाले लोगों के दुष्चक्र का परिणाम था और सारा देश किंकर्तव्यविमूढ था तो उस समय सारे देश की कोटि कोटि जनता ने राजीव गांधीजी को प्रधान मंत्री बनाया

[डा० रत्नाकर पांडेय]

और प्रधान मंत्री बनते ही इस नौजवान ने जो कुछ किया मैं इस सदन के माध्यम से कहना चाहता हूं कि उतना गतिशील ढंग से, उतनी तेजी के साथ विभिन्न दायरों को लेते हुए चाहे गरीबों के उत्थान का काम हो, चाहे बेरोजगारी मिटाने का काम हो, चाहे हरिजनों, गिरिजनों और आदिवासियों के उत्थान का काम हो चाहे राजनीति में छोटी उम्र से मतदान देने का काम हो चाहे पंचायती राज के सपने को जनजीवन में सही ढंग से उतारने का काम हो, चाहे विश्व की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति हो, सब क्षेत्रों में जितना गतिशील ढंग से आगे कदम बढ़ाया तथा देश को और सारी विश्व मानवता को प्रभावित किया उतना न नेहरु जी प्रभावित कर सके, न इंदिराजी कर सकी थी । यह शक्ति हमारे प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी के प्रधानमंत्रित्व की है यह मैं रिकार्ड कराना चाहता हूं इस सदन के पटल पर ।

माननीय उपसभापति जी, आज आप अपने निर्धारित समय पर आयीं । प्रातः-काल जो दृश्य यहां देखा गया उसमें मैं अपने आपोजिशन के मित्रों की ओर इशारा करना चाहता हूं, वे है नहीं, उन्होंने कहा कि कनेक्शन आवर को सस्पैंड करके, प्रधान मंत्रीजी ने खालिस्तानी और राष्ट्रीय विरोधी दल के लोगों को कहा है, इस पर चर्चा करनी चाहिए और एक घंटे तक सदन का माहौल विरोधी दल के लोगों ने ऐसा बना रखा था जैसे सट्टा बाजार हो, मछली बाजार हो । इस तरह की हालत इस सर्वोच्च सदन की बना रखी थी । वास्तव में हमारे आपोजीशन के पास न कोई प्रोग्राम है, न कोई पालिसी है, न कोई दृष्टिकोण है, न कोई आर्थिक नीति है और न कोई विदेश नीति है, बल्कि ये तो ऐसे लोगों को लेकर चलना चाहते हैं--खालिस्तानी लोग इस सदन में बैठे है, खालिस्तान की मांग करने वाले कि खालिस्तान को स्वतंत्र किया जाये--हमारे माननीय सदस्य श्री राम जेठमलानी जी इस सदन के सदस्य हैं होते तो मुझे भय नहीं है, उनके प्रत्यक्ष में कहता, उन्होंने खुलेआम दिल्ली में खालिस्तानियों को स्वतंत्र राष्ट्र का दर्जा दिया जाए, इसकी मांग की और यह इस जनतंत्र का दुर्भाग्य है ।

मैंने कहा कि इंदिरा गांधी जी अवतारी थीं । राम को सरयू में डुबकर मरना पड़ा, कृष्ण को बहेलिये के तीर से मारा गया , बुद्ध को सुअर का जहरीला मांस खिलाकर मारा गया और गांधीजी को 3 गोलियों से मारा गया लेकिन इंदिरा गांधी को स्टेनगन की गोलियों से छलनी कर दिया गया। इतिहास के पन्नों पर अभी इंदिरा गांधी के खून के छींटे सूखे नही हैं और इस अवतारी शक्ति की जिन लोगों ने हत्या की है --मैं नही मानता हूं कि किसी सिक्ख ने उनको मारा बल्कि उस सिख्ख की काया में विदेशी आत्माओं ने अपने को बैठा दिया और उनकी आत्मा बन गए और उन्होंने हमसे इंदिरा जी को छीन लिया । उन हत्यारे की वकालत करने वाले व्यक्ति इस सदन में बैठे हो और हमारे आपोजिशन के लीडर माननीय गरुपदस्वामी जी कह रहे थे, मैंने प्रश्न किया था कि आपके दल ने इंदिरा गांधी की हत्या करने वाले की वकालत करने वाले को खालिस्तान की मांग करने वाले को इस सदन का टिकट दिया और इस सदन में वह सदस्य हुआ . . . । क्या यह खालिस्तान के समर्थन की बातनहीं है, टैरोरिजम के समर्थन की बात नहीं है ? हमारा प्रधान मंत्री जब सत्य कहता है, तो लोगों को बुरा लगता है क्योंकि अपोजिशन के पास न कोई नीति है, न सिद्धांत है, न कार्यक्रम है और न योजना है ।

माननीय उपसभापति जी, हमारे बीच में कभी हमारे सहयोगी के रूप में सो-काल्ड राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह बैठते थे और उन्होंने इस देश में पहली बार कोई विदेशी एजेंसी जिसका डाइरेक्टर सी० आई० ए० में काम करने वाला रहा हो, रिटायर्ड, उसके पास सारी चीजें

हमारे देश के वित्त मंत्रालय से संबंधित दस्तावेज भेजे, जो सेना से संबंधित थे, जो और चीजों से संबंधित थे । यह बड़ी भारी ब्लैक मेल का प्रयास थी ।

एक स्वार्थी को बहुत बुद्धि आ जाती है, वह बड़ा बुद्धिमान हो जाता है और कुछ लोगों ने चढ़ा दिया कि आप ही सब कुछ हो सकते हैं । हमने वह दिन भी देखा है कि सन 1974 में जब विश्वनाथ प्रताप सिंह को डिप्टी मिनिस्टर बनाया गया था, कभी वह कहते थे कि इंदिरा गांधी शंकर को तरह सारे देश में घूम रहे हैं और शंकर का त्रि-नेत्र खुल गया है । वह व्यक्ति हमसे जुदा हुआ और ब्लैकमेल करने के लिए जुदा हुआ है । अभी दो-तीन दिन पहले उन्होंने कहा कि पहले मोटर-साइकिल पर चढ़ कर चुनाव लड़ते हैं, हम धन की आवश्यकता को महसूस नहीं करते है इलैक्शन में—यह विश्वनाथ प्रताप सिंह का स्टेटमेंट था और कल-परसों कहा कि जो बड़े-बड़े पूंजीपति घराने है, उनसे हम चंदा लेंगे । जैसे फुटबाल खेला जाता है, विश्वनाथ प्रताप सिंह की हालत वैसी हो गई है । अपोजीशन के बीच में फुटबाल को किक की तरह कभी रामराव किक मारते है तो देवी लाल उनको कवर करते हैं और कभी हेगडे किक मारते है तो वह और लोग कवर करते हैं । तो यह विचित्र स्थिति है । यह सब हमारी सरकार को ....रों का कारण है ।

जब ज्ञानी जैल सिंह भारत के राष्ट्रपति थे, तो उनके रिटायर होने के तीन दिन पहले हमने आरोप-पत्र दिया था और उस आरोप-पत्र में सीधे हमने आक्षेप लगाया था कि विश्वनाथ प्रताप सिंह ने हजारों निर्दोष लोगों को हत्या डाकू उन्मूलन के नाम पर अपने मुख्य-मंत्री रहते हुए कराई । उन पर राम जानकी ट्रस्ट और दैइया ट्रस्ट को हजारों एकड़ जमीन हड़पने के आरोप हमने लगाए । हमने उन पर आरोप लगाया कि उन्होंने सिटी बैंक, न्यूयार्क में अपने बेटे को वित्त मंत्री होने के बाद एक लाख साठ हजार रुपए महीने की नौकरी दिलवाई, शेयर्स खरीदे, अनेक आरोप लगाए ।

तत्कालीन राष्ट्रपति ने तुरन्त सरकार को 'इमीडिएट' और 'एप्रोप्रीएट' एक्शन लेने को कहा है । पर हमारा गृह मंत्रालय आंख पर पट्टी बांध कर और कान में तेल डाल कर बैठा रहा और आज तक कोई कार्यवाही नहीं की गई है जब कि दोनों सदनों के सैकड़ों सदस्यों ने राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री को भी यह ज्ञापन दिया ।

आज बड़े घमंड के साथ लोग कहते हैं कि तमिलनाड में हम चुनाव हार गये हरियाणा में हम चुनाव हार गये । हम उन बार्डर्स की चर्चा करना चाहते हैं, नार्थ-ईस्टर्न स्टेट्स की जहां विदेशी ताकतें, हमारे पड़ौसी देश हमारी धरती को हड़पने के लिए वहां के भोले-भाले पहाड़ के रहने वाले लोगों को—चाहे नागालैंड हो, चाहे मीजोरम हो, चाहे अन्य प्रान्त हो, उनका उपयोग करते थे और हर जगह अपनी मिलिटेंट फोर्स के नाम पर उन्हें विदेशी सहायता, हथियार तक देते थे और उन क्षेत्रों में मुझे जाने का मौका मिला है, चुनाव में काम करने का नागालैंड में मौका मिला है । नार्थ-ईस्टर्न स्टेट्स के एक-आध को छोड़ कर प्रायः सभी प्रांतों में मैं गया हूं वहां की जनता आज राष्ट्रीय धारा से जुड़ना चाहती है और हमारे अपोजीशन के लोग उसे क्षेत्रीयता के दायरे में कस करके रखना चाहते है, बांध करके रखना चाहते है । जहां जाति, संप्रदाय, धर्म, भाषा इस देश की अखंडता के प्रति एक चैलेंज है वहीं जो क्षेत्रीयता वाद है वह इस देश को खंड-खंड करने के लिए सब से बड़े हथियार के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। अपोजीशन के लोग हमारी बात करते हैं, रामाराव पर हाई कोर्ट ने भ्रष्टाचार का फैसला दिया और विवेकानंद का साफा बांध कर अभी हमारे माननीय मित्र ने कहा कि राम का फोटो बांट करके आज भी वह सत्ता में बने हुए है ।

[डा० रत्नाकर पांडेय]

हमारे यहां अगर किसी पर दाग लग गया, हाई कोर्ट ने चुरहट लाटरी कांड का फैसला दिया तो हमने मुख्य मंत्री से तुरन्त इस्तीफा लिया, क्योंकि हम चरित्र पर विश्वास करते हैं। हम जो कहते है वह करते है। इनकी तरह हम कई रूप अख्तियार नहीं करते हैं। आज स्थिति यह है कि जो प्राग्रेसिव-वे में बात करते हैं हमारे कम्युनिस्ट लोग चीन समर्थक कम्युनिस्ट हों, रुस समर्थक कम्युनिस्ट हों, हमारे पश्चिम बंगाल में ज्योति बसु जी की सरकार है। उस सरकार की स्थिति क्या है कि यहां से जो रुपये हम सहायता के रूप में प्रदेश की विकास के लिए देते हैं या गरीबों में वितरण के लिए या विभिन्न योजनाओं के लिए देते हैं वे केवल अपनी पार्टी के लोगों को देते हैं और इस तरह से अपनी पार्टी को मजबूत बनाने के लिए, जो जनता के लिए योजनाएं हैं उन जनता को योजनाओं का दुरुपयोग करते हैं। भ्रष्टाचार की बात करते हैं। ज्योति बसु भी दूध के धोये हुए नहीं हैं। उनके बेटे पर लग कांड की चर्चा इस सदन में हो चुकी है। कलकत्ता में सत्यनारायण पार्क है और वह सत्यनारायण पार्क हार्ट आफ दी सिटी है। मैं इस सदन में सिद्ध कर सकता हूं कि वहां रुपया ले करके पश्चिम बंगाल की सरकार के नुमाइंदों ने किसी सेठ को होटल बनाने के लिए दिया और आज भी हमारे दल के लोग युद्ध छेड़े हुए हैं सुप्रीम कोर्ट से ले करके जनता के बीच में कि यह पार्क है प्रदूषण को समस्याओं से निपटने के लिए, इस पार्क का दुरुपयोग न किया जाए।

माननीया उपसभापति जी, आज राजनीति में सब से बड़ी जो चिंता का विषय हो गई है आज तस्कर और हिंसक लोग बड़ी तेजी के साथ राजनीति में प्रवेश कर रहे हैं। हमारे आलोचोना के नेताओं ने बहुत सी बातें कीं लेकिन हर चीज में उनका नेगेटिव एप्रोच है चाहे कोई अच्छी चीज हो। राजीव गांधी भारत के पहले प्रधान मंत्री हैं जिन्होंने चीन में जा करके एक स्वस्थ वातावरण बनाया और बातचीत करने का तरीका निकाला। पाकिस्तान की नई प्रधान मंत्री बेनजीर भुट्टो से बातचीत की और उसका परिणाम सारे देश ने, सारी दुनियां ने देखा कि जो आतंकवादी ताकतें पिछली सरकार से पाकिस्तान से पंजाब में आती थीं उन ताकतों पर रोक लगाने की प्रक्रिया पाकिस्तान सरकार ने शुरू कर दी है। यह उपलब्धि क्या कम है? आज पंजाब की समस्या बनी हुई है और उस समस्या का समाधान सब लोग मिल करके क्यों नहीं विरोधी दल के लोग बताते कि क्या किया जाए? टेरोरिस्ट ताकतें आज फिर अपना सिर उठा रही हैं और इसलिए सिर उठा रही उन्हें छूट मिली हुई है और बड़ी तेजी के साथ हमारी सरकार ने पिछले वर्षों में जिस तरह से अनेक टेरोरिस्ट्स को बेनकाब किया है उनको इस धरती से उठा दिया है, वह कम महत्वपूर्ण नहीं है। आने वाले दिनों में उसका विशेष महत्व होगा। हम संकल्प बद्ध हैं हम दृढ़ हैं, हम अपने प्राण दे देंगे, लेकिन इंदिरा गांधी के खून के छींटे जो सूरज से ज्यादा रोशनी आज भी दे रहे हैं उसकी छाया की सौगन्ध हम कभी भी पंजाब में टेरोरिज़म या खालिस्तान की आवाज जब तक बन्द नहीं कर देंगे हमेशा के लिए, तब तक हम चैन नहीं लेंगे। यह हमारा कमिटमेंट है। उसमें विरोधी दल के लोगों को चाहिए कि सहयोग दे और यह जो नरसंहार हो रहा है उसके लिए मिलकर के ऐसी व्यवस्था करें कि यह नरसंहार रूके।

[उपसभाध्यक्ष (श्री ... ...ाई) पीठासीन हुए]

उपसभाध्यक्ष महोदय, धर्म को राजनीति से अलग करने की बात हमारे माननीय राष्ट्रपति जी ने की है। कई बार सदन में इसकी चर्चा हो गई है। जितने भी मंदिर हैं, जितनी मस्जिद हैं, जितने गुरुद्वारे हैं, जितने गिरजाघर हैं, वह सभी धार्मिक स्थान हैं, जहां से मानवता को नई ज्योति अपनी आस्था के अनुसार मिलती है और इंसान अपनी अस्तित्व समर्पित करते हैं अनादि करते हैं। को और नई ताकत प्राप्त कर शक्ति उन स्थानों पर हथियार रखे जाय, उन

स्थानों पर विदेशी सहायता के माध्यम से उनके विकास के काम, आर्थिक सहायता के काम किए जायं और माईक बांध करके बड़ी तेजी से जनता को सुनाने के लिए ऐसे अनर्गल प्रलाप किए जायें, जो धार्मिक उन्माद भड़काने वाले हों, उचित नहीं है। अभी सलमान की पुस्तक को लेकर बंबई में जो कुछ हुआ, वह प्रत्यक्ष इसका उदाहरण है । राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करते हुए मैं कहना चाहूंगा कि सरकार को आज की जितनी भी धार्मिक संस्थाएं हैं या धार्मिक स्थान हैं, उन सबका नेशनलाइजेशन करना चाहिए और कड़ाई के साथ ऐसा करना चाहिए कि वहां न हथियार एलाऊ होंगे, न विदेशी धन का उपयोग होगा और न ही सांप्रदायिकता भड़काने वाले बात की जाएगी। जब तक इसका बंधन नहीं लगाया जाएगा, हम धर्म को राजनीति से अलग नहीं कर सकते, भले ही लाख प्रस्ताव पास कर लें। इसलिए कड़ाई के साथ इसका पालन हमको करना पड़ेगा।

चुनाव-सुधार की बात कही गई । चालीस वर्ष हुए भारत को स्वतंत्र हुए, सब लोग बात करते रहे कि 18 साल की आयु के लोगों को मताधिकार हो। मैं कहूंगा, जैसे--"मिट्टी न शिशुता की झलक, जीवन झलकता अंग", 16-18 साल का नौजवान शिशुता से अलग होता है और यौवनावस्था में पदार्पण करता है और उस समय उसके भीतर इतनी ताकत होती है कि पत्थर भी सामने पड़े तो उसको मसल दे, वह पत्थर पाऊडर बन जाय। इतनी ताकत और तमन्ना होती है, इस उम्र के लोगों में और अभी तक मतदान की उम्र 21 वर्ष की थी। महसूस तो सबने किया, ऑपोजीशन ने किया, हमारी बहुत सी सरकारों ने किया, लेकिन पहली बार राजीव गांधी जी ने 18 साल के लिए बालिग मताधिकार का प्रावधान करके भारत में एक क्रांतिकारी कदम रखा। लोग कहते हैं कि एण्टी-एस्टेब्लिशमेंट होता है युवक। वह क्या होता है ? आज का युवक सत्य का साक्षात्कार करना जानता है, आज का युवक यर्थातवाद में विश्वास करना जानता है, आज के युवक की कथनी-करनी और चिंतन का कोई भेद नहीं है। इससे कोई लगभग 15 करोड़ मतदाता बढ़ेंगे और जो एक उनकी नई तमन्ना है उसके अनुसार नए भारत के सृजन में विश्वास करते हैं।

माननीय उपाध्यक्ष जी, आपका इशारा हो गया है कि मैं समापन की ओर आऊं। वैसे बातें तो बहुत सी करनी थीं, समाप्ति की ओर आता हूं। हमारे यहां आर्थिक दृष्टि से विकास हुआ है, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की दृष्टि से विकास हुआ है, दक्षेश ने नशा-निरोधक वर्ष मनाने का संकल्प लिया है और इस सबमें हमारे देश के नेता राजीव गांधी जी का योगदान व्यापक रूप से रहा है। आर्थिक दृष्टि से भी हम सफल और संपन्न हुए हैं।

उपाध्यक्ष जी, महिलाओं के लिए दो हजार वर्ष तक का जो प्लान है, उस प्लान को मैंने देखा है। उसकी तैयारी में भी मुझे अपने विचार व्यक्त करने का मौका मिला है।

"यत्र नार्स्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:,

इसका नारा तो बहुत लगाते थे, लेकिन जब उसे हिस्सेदारी देने की बात आती थी तो असूर्यंपश्या बनाकर, सूरज भी न देख सके, घुटने तक उसका घूंघट रहता था, उस नारी को हम समान धरातल पर लाने का प्रयास कर रहे हैं।

और जीवन के हर क्षेत्र में चाहे आर्थिक क्षेत्र हो, शिक्षा का क्षेत्र हो, एडमिनिस्ट्रेशन का क्षेत्र हो या समाजसेवा का क्षेत्र हो—उसे तीस प्रतिशत तक की स्वीकृति देने के बारे में हम विचार कर रहे है। यह एक बड़ा भारी क्रांतिकारी कदम है।

माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मै बनारस का रहनेवाला हूं। तीनों लोकों से न्यारी वह धरती मानी जाती है। उस धरती पर मेरे दो व्यवसाय हैं। एक अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर बनारसी साड़ी का और दूसरा गलीचे का। हमारी सरकार ने घोषणा की है कि विदेश को जो माल भेजा जाएगा और उससे विदेशी मुद्रा अर्जित होगी। तो हम बताना चाहते हैं कि लगभग 300 करोड़ रुपए का गलीचा हमारे जिले से विदेशों में जाता है और जो मिल में काम करने वाले हैं या खादी ग्रामोद्योग का उत्पादन है—इन सब पर हम 5 प्रतिशत की सबसिडी देते हैं। हम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद ज्ञापन करते हुए भारत सरकार से मांग करेंगे कि यह कार्यक्रम बीस सूत्रीय कार्यक्रम से जुड़ा हुआ कार्यक्रम है, लाखों महिलाएं, पुरुष और हजारों बच्चे इस काम में अपनी उंगलियों को लगाकर अपनी पुश्तैनी कला का प्रदर्शन करते हैं। तब कालीन बनते हैं। उन्हें यह लाभ मिले इसके लिए इसी बजट सत्र में 5 प्रतिशत की सबसिडी की व्यवस्था होनी ही चाहिए। महोदय, मैं माननीय कपड़ा मंत्रालय के मंत्री सिंधी जी का कृतज्ञ हूं। उनका कल ही पत्र मिला जो इंटरनेशनल कार्पेट फेअर होता है, उसको सरकार अभी कोई सहायता नहीं देती। मैंने आग्रह किया और उन्होंने उसके लिए 1 लाख 20 हजार रुपए प्रदान किया है। हम बनारसी साड़ी का सिल्क पैदा नहीं करते। वह बंगलौर या विदेश से मंगाते हैं। उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं मानता हूं कि जब बनारस सिल्क की साड़ियां स्त्रियां पहनती है तो देखने वालों की निगाह टिक जाती है उस साड़ी की डिज़ाइन और बारीकी पर। उसे बुनने वाले मजदूरों के बीच मे मैं रहता हूं। साड़ी बुनने वाले कलाकार जो डिजाइन निकालते हैं उनके पेट भूखे रहते हैं। साड़ी खरीदने वाले जो बीच में लोग रहते हैं या कोआपरेटिव के नाम पर हमारी सरकार जो अधिक-से-अधिक रेशम देती है जो उन गरीबों के लिए होता है वह उन तक नहीं पहुंच पाता है। सत्ता के दलाल और बीच के लोग उसका दुरुपयोग करते हैं। यह मिटना चाहिए और सीधे उत्पादक को उसका फायदा मिलना चाहिए।

उपसभाध्यक्ष जी, अंत में मैं एक बात और कहना चाहूंगा। अभी पिछले दिनों मैंने इस सदन में मुद्दा उठाया था कि पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षाएं हिन्दी के माध्यम से होनी चाहिए।

उपाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : दूसरी भाषा के साथ हिन्दी भी होनी चाहिए।

डा० रत्नाकर पांडेय : हिन्दी भी होनी चाहिए। महोदय, हर परीक्षा में अंग्रेजी अनिवार्य है। जो लोग पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षाएं पास करते हैं, वही सारे देश में प्रशासनिक सेवाओं में आते हैं। मैं विस्तार में जाकर सदन का अधिक समय नहीं लेना चाहता। माननीय गृह राज्य मंत्री चिदम्बरम् जी ने उस विशेष उल्लेख का जवाब हम को दिया है कि अंग्रेजी ससलि अनिवार्य की गयी है कि जो लोग पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षाएं पास करते हैं, उन्हें देश के विभिन्न हिस्सों में जाकर काम करना पड़ता है। माननीय उपसभाध्यक्ष जी, इस सदन के 80 प्रतिशत से अधिक और लोक सभा के कई सौ सदस्यों ने प्रधान मंत्री जी से प्रार्थना की है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं को अनिवार्य रूप से पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षाओं में रखा जाए। शिक्षा मंत्रालय ने इस क्षेत्र में काम किया है। जो काम करे, उसकी प्रशंसा करना अनिवार्य भी है। अभी आई० आई० टी० में किसी ने थीसिस लिखी, वह दो-तीन साल पहले रिजेक्ट हो गयी। फिर वह शिक्षा मंत्रालय पर भूख हड़ताल पर बैठा। मैंने शिक्षा सचिव से बात की

[डा० रत्नाकर पांडेय]

टी. की परीक्षाएं हिन्दी और भारतीय भाषाओं में अगले वर्ष से होने लगेंगी, यह आश्वासन दिया गया। अभी इंजीनियरिंग कोर्स के विद्यार्थी बैठे थे, शिक्षा मंत्रालय से मैंने आग्रह किया तो सचिव महोदय ने जवाब दिया कि वह एटानमस् बॉडी है कलकत्ता की, तो हमने कहा कि अपना सम्पर्क, सम्बन्ध भंग कर दो, एटानमी उनको समझ आ जाएगी। आपको जानकर खुशी होगी कि हिन्दी और भारतीय भाषाओं की शिक्षा वहां अनिवार्य कर दी गई है। मैं इस सदन के माध्यम से माननीय चिदम्बरम जी से सम्मानपूर्वक कहना चाहता हूं कि वे अपना दुराग्रह छोड़ें और इस देश में केरल में कोई पढ़ता है अपनी भाषा में, तमिलनाडु में पढ़ता है अपनी भाषा में, मिज़ोरम में पढ़ता है अपनी भाषा में, बंगाल में पढ़ता है, बिहार में पढ़ता है, देश के किसी कोने में अपनी भाषा में पढ़ता है तो उस अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करके, उसे अपनी भाषा में अपने ज्ञान को, अपनी प्रतिभा को, अपने प्रेजेन्स आफ माइंड को परीक्षाओं के माध्यम से व्यक्त करने की व्यवस्था करनी होगी अन्यथा जन-आन्दोलन का रूप यह चीज ले सकती है। यह आज मैं इस सदन के माध्यम से कह रहा हूं।

हिन्दी राजभाषा है और उपसभाध्यक्ष जी, यदि हम हिन्दी की बात करते हैं तो हम कमिटेड है कि पहले समस्त भारतीय भाषाओं का उद्धार करेंगे तब हिन्दी का उत्थान करेंगे। कई हिन्दी के आग्रहवादी लोग मुझे कहते हैं कि आई० आई० टी० में हिन्दी में आपको परीक्षाएं चालू करवानी चाहिए थी, भारतीय भाषाओं में क्यों करवा दिया? समस्त भारतीय भाषाएं चलेंगी तब जाकर के हिन्दी का विकास होगा। यह हमारा चिन्तन है, सत्य है और सत्य से हमें मुख नहीं मोड़ना चाहिए।

माननीय उपसभाध्यक्ष जी, राष्ट्रपति जी ने अनेक बिन्दुओं की ओर हमारा ध्यान आ[illegible] [illegible]धान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : कोई नया प्वाइंट नहीं है। अभी यह बात करके आप छोड़ दीजिए।

डा० रत्नाकर पाण्डेय : हिन्दी राजभाषा है और चिदम्बरम जी के मंत्रालय में ही राजभाषा विभाग है। आपको जानकर खुशी होगी कि 1976 में इन्दिरा जी ने राजभाषा विभाग की स्थापना की और पिछले दो साल के अंदर ही राजभाषा विभाग ने 3 खण्ड में, हजारों पृष्ठ के खण्ड है जैसे अनुवाद खण्ड मैकेनिकल असिस्टेंट खण्ड, प्रशिक्षण खण्ड, माननीय राष्ट्रपति जी को समर्पित कर दिए और सितम्बर में निरीक्षण जो हुए हैं भारत सरकार के हजारों कार्यालयों के, उन्हें क्यों कठिनाइयां आ रही हैं राजभाषा में काम करने में, वह खण्ड भी हम प्रस्तुत करने जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में मेरी मांग होगी राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के अवसर पर कि जो कुछ संसदीय राजभाषा समिति ने प्रस्तुत किया है, मुझे पता चला है कि पहले खण्ड को कानून का रूप राष्ट्रपति जी ने अपनी कलम से दे दिया है, सारे खण्डों को कानून का रूप दें और कानून की अवहेलना यदि कोई करता है, राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित कानून की अवहेलना करता है तो उसके ऊपर कड़ा नियंत्रण लगाकर के उसके कार्यकलाप को रोका जाए।

हम यह जानते हैं कि सारा देश आज विकास की ओर उन्मुख है। गरीबी रेखा से नीचे जिंदा रहने वालों के लिए काम हो रहा है लेकिन हमारा अपोजिशन नकारात्मक रुख अपनाए हुए है ... (**व्यवधान**) ...

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : कोई नया प्वाइंट हो तो ... (**व्यवधान**) ...

डा० रत्नाकर पांडेय : उनके पास कोई अपना दायरा नहीं है, कोई दृष्टि नहीं है और दृष्टिहीन व्यक्ति सपने देखता है और सपने देखने वाले कभी सफल नहीं होते। जो कर्मठ न हो, वह सफल नहीं होता है।

राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर माननीय पी० एन० सुकुल के धन्यवाद प्रस्ताव का तहेदिल से समर्थन करते हुए हम

कहना चाहते हैं कि चाहे साम्प्रदायिक ताकतें हों, चाहे भाषावादी ताकतें हों, चाहे क्षेत्रीय ताकते हों, चाहे जातिवादी ताकतें हों, समस्त ताकतों को . . . (**व्यवधान**) . . .

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : आप खतम कीजिए । काफी टाइम हो गया है।

डा० रत्नाकर पाण्डेय : विनष्ट करने के लिए हमे अब अपनी दृष्टि बदलनी होगी और "धावना नहीं अब रण होगा, जीवन हो या कि मरण होगा", उस भावना से राजीव गांधी जी की सरकार ने जो कुछ किया है उसकी हमें जन-जीवन में स्थापना करनी है और उस स्थापना में यह देश सफल, सार्थक और सजीव रूप से, कर्मठ रूप से लगा हुआ है । आज विरोधी दल के पास कोई नीति नहीं है, न कोई सिद्धांत है, न कोई दृष्टिकोण है । एक सबल अपोजिशन जिस राष्ट्र में नहीं रहता है, वह देश कमजोर हो जाता है । आचार्य नरेन्द्र देव से पंडित जवाहरलाल नेहरू ने आग्रह किया कि आप कैबिनट में आ जाइए तो उन्होंने कहा कि नेहरू जी, मैं देख रहा हूं कि मेरे सारे साथी सरकार मे चले जा रहे हैं। आप जानते हैं कि जनतंत्र चलाने के लिए अपोजिशन का मजबूत होना जरूरी है । इसलिए मुझे अपोजिशन में रहकर काम करने दीजिए। मैं अपोजिशन के लोगों से कहूंगा कि आचार्य नरेन्द्र देव जैसे लोगों की भावनाओं की हत्या मत करो, दिन-दहाड़े उनका बलात्कार मत करो । जो अच्छे काम है उनका स्वागत करो । नीति बनाओं, कार्यक्रम बनाओ और जनता के बीच में जाओ . . .

इन शब्दों के साथ उपसभाध्यक्ष जी, मैं महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण का समर्थन करते हुए सुकुल जी के प्रस्ताव का मैं हृदय से पूर्ण समर्थन करता हूं ।

SHRI GHULAM RASOOL MATTO (Jammu and Kashmir): Mr. Vice-Chairman, I rise to support the Motion of Thanks put forward by Shri P. N. Sukul. Since Mr. Sukul made his speech the Economic Survey has also come for the current year. Mr. Vice-Chairman. I am really gratified to note from the Economic Survey that the wholesale price index about which many Members have spoken here, has come down from 10 per cent at the end of March 1938 to 5 per cent in January 1989. The consumer price index. which is a very important aspect, on point to point basis has come down from 10 per cent in March 1988 to 8 per cent in September 1988. It had risen in October-November but has again declined in December. GNP has increased by 3.6 per cent. There has been an increased allocation, increased funding in electricity, gas and water but it grew only by 7 per cent as compared to 11.1 per cent a year ago. Transport, storage and communications also grew by 5.8 per cent against 6.8 per cent and domestic savings fell to 20.2 per cent from 21.6 per cent.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Has domestic saving increased?

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: Domestic saving has declined from 21.6 per cent to 20.2 per cent. The most gratifying thing that I have to mention is about food production. It is likely to be 170 million tonnes which is an increase of 17—20 per cent and the industrial production growth is supposed to be at 7.5 per cent.

Sir, it is gratifying to note that we have made these progresses. The other day when I was listening to a programme and when it was said that in Peru and Brazil there was an inflation of 1900 per cent, I was saying that we should be grateful to god that our inflation has come down to 5 per cent. While this position is going on, there are some good. points, there are some areas about which I would like to draw the attention of this Government through this medium of speaking on this Motion of Thanks. (*Interruptions*); While I was talking about the bright areas. I will come to some grey areas which in my opinion need the attention of the Government. The debt services of all the external resources has risen as a percentage of receipt from 8.5 per cent in 1979-80, 12.1 per cent in 1984-85 to 24 per cent in 1987-88. For the year 1988-89. it is projected to be 27 per cent. This is a ser-

[Shri Ghulam Rasool Matto]

ious situation. The World Bank has put the figure at 30 per cent. But our Economic Survey speaks about 27 per cent, which when compared to the position in 1979-80, should cause concern to us.

The other point is in regard to increase in our exports. In spite of increase in our exports, as you also mentioned, the trade deficit has gone up by Rs. 1688 crores in the first nine months of 1988-89. Debt servicing of external assistance, which does not include servicing of commercial borrowings, IMF credit other than trust funds, has increased at an annual rate of 30.6 per cent during the first three years of the Seventh Plan as against only 8 per cent rise in the entire Sixth Plan period Debt servicing on account of external commercial borrowings and extended finance facilities has also been rising in the last few years. Generally a debt service ratio of 20 per cent is taken as a prudent limit. And this was the position before the latest phase of import liberalisation. During 1988-89, India's net flow of external assistance is estimated at Rs. 2599 crores as against Rs. 1567 crores in 1986-87 and Rs. 552 crores in 1979-80. Debt servicing, including interest payment, which totalled Rs. 801 crores in 1979-80 has gone up to Rs. 2770 crores in 1988-89. As regards external commercial borrowings, the approvals in....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): If this was not done, how the buoyancy in industry would have come?

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: It has come, but as I said, the prudent limit is 20 per cent. One should remember that after all it has to be repaid. At a time when we are caught in a trap, we cannot service the debt, we cannot service the capital borrowed. This is my view.

Now as regards the external commercial borrowings the approvals in 1987-88 were Rs. 2654 crores as against Rs. 1396 crores in 1986-87. There was nearly 100 per cent increase in just one year. As regards India's total external debt—and that is where I contested Mr Balanandan's statement yesterday when he said that the external debt was Rs. 90,000 crores—according to the Economic Survey, India's total external debt on Government account is estimated at Rs. 36578 crores. He had given the figure of Rs. 90,000 crores based on a report in some Washington-based Magazine. But the Economic Survey has given the figure of Rs. 36578 crores, including the disbursed and outstandings, in 1987-88. The total servicing stood at Rs. 2229 crores. The external debt on non-service account was Rs. 848 crores in 1987-88 while the total debt service Payments on that account was Rs. 394 crores—*i.e.* nearly half of the total debt. The last year of the Seventh Plan may turn out to be a far difficult year in terms of balance of payment position. In this context, I have two suggestions to make. The first is that we have to take this thing into consideration that our balance of payment position is such that we cannot afford a thing like the Open General Licence. This absolute liberalisation in the form of Open General Licence has cut us in two ways. In the first instance, the Open General Licence has created a capacity which is more than what is required, with the result that in India itself there are many industrial establishments which have suffered on account of this. The second and most important point is this. Mr. Vice-Chairman, I recall a small incident in the 70's when I went to Bahrain. I found that a square Kashmiri shawl which would cost us Rs. 78 or 80 in Kashmir was being sold there for Rs. 56 only. When I asked the seller how it was possible whereas for me back in India it costs Rs. 80, he made the point that the licence he got out of his was fetching him a premium which gives an impetus to the exporter to reduce the prices. As a result of this liberalization, that is not possible. With regard to foreign exchange, you are at present charging a tax of 15 per cent on those who want to go abroad. Sir, you will be surprised to know that the Import Licences against exports are being sold only at two to three per cent premium and licences worth hundreds of crores of rupees have been sold at these rates. So, it could have served

a dual purpose if the Open General Licence liberalization policy were to be discontinued. If it was done, when these licences, which in turn boost exports, would have fetched money and those exporters would have reduced the export prices and, therefore, boosted our exports. Therefor, the Government needs to give attention to this point.

Sir, the honourable President has mentioned about oilseeds. It is gratifying to note that our oilseed imports would considerably come down this year.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Fifty per cent.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: More than 50 per cent. Sir, both you and I have been stressing on two vital sectors. Sir, whatever the Green Revolution has brought about in the agricultural field, Sir, you have also made this observation in your speeches last year, there are two items in which the poor people are vitally interested, and these are oilseeds and pulses. In oilseeds, it is gratifying to note that the Oilseeds Technology Mission has made a considerable breakthrough this time. But this needs to be pushed up and the Government needs to give attention to this Technology Mission so that this country of ours, which is not a country but a continent, should not only be self-sufficient in oilseeds but should also be able to export oilseeds. This goal we should aim at and attain it. But in the matter of pulses, I regretfully have to say that in pulses, which are the common man's food, no breakthrough has been made, nothing has been done. I would request the Government, through you, that some breakthrough needs to be made. In this connection, I have come to know that, for instance, there is an Australian genetic technology for increasing the production of pulses. In *moong*, which is a common pulse, I am told that the production is six times more due to the inputs they make, the new variety of seeds and the new variety of genetic engineering processes which they are employing. So, the Government needs to give proper attention to pulses which, to my mind, is a very important area.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Production of pulses in 1974-75 was higher than what it is today.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: That, exactly, is the position and I think the Government should look into this.

Mr. Vice-Chairman, you are also a protagonist of the public sector—there is no doubt about it. The Government had given an assurance to us that it would come out with a White Paper on the public sector. I would request the Government, through you, that the White Paper should come because the idea is that while the policy of the Government is that the public sector should have commanding heights, we, Members of Parliament, who have a little interest in economics, may be able to understand it and contribute our mite. So, that white Paper should be expeditiously brought out so that we are in a position to comment on that and we are able to do something about it.

Sir, with regard to education, a very important subject in the Education Policy is the vocationalization of secondary education. But not much progress has been made in that direction—I am talking of my own State as well as many other States. In my opinion, this vocationalization has not attained the degree of emphasis that was given in the Education Policy. This needs to be looked into and due emphasis laid on that. Sir, regarding the panchayat system the decentralisation...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Now is it the last point?

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: No, Sir. Only five minutes more.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): All right.

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: I will finish in five minutes.

[Shri Ghulam Rasool Matto]

With regard to the panchayat system, this is a very good step being taken by the Government. But, I would only request the policy-framers of the Government that when this new system is brought forth, it should not encroach upon the States' rights. A reform in the panchayat system is a must, but that should not [illegible] encroaching on the rights of the [illegible]

Sir, I must congratulate the Government and the Prime Minister for his visit to China and Pakistan.

With regard to China, it is a very good step. I have only to request one thing here. There is a passage given in the President's Address that there is to be a joint group on economic relations and trade and science and technology. In this connection, Mr. Vice-Chairman, Sir, I [illegible] who are dealing with [illegible] trade relations and science and technology and economic relations with China that they should consider the possibility of India's breakthrough in Chinese Shangzen free trade zone. Mr. Vice-Chairman, I had an occasion to visit that area. I saw huge giants from America, Pepsi Cola and many other giants from America and many other countries are there. About 500 of them have come up during the last three or four years. I was told that there was a very great possibility that our organisations like the BHEL and the HMT and such other organisations can be set up there and feed the entire China. I think the framers who are concerned about it, should look into this, that we must have a breakthrough in this area.

In regard to Pakistan, we have welcome the position about the democratic process that has come up in Pakistan. But I would only request the Government that we should take up seriously the matter of infiltration of arms into Kashmir from Pakistan. An assurance was there, and the feeling was also there that there would not be any smuggling of arms. Actually it had stopped. But lately we caught about 80 to 90 persons who had been trained in Pakistan. Yesterday there was a bomb blast in Srinagar. Obviously the grenade had come from that area. I would only request the Prime Minister that he should personally take up this matter with Ms. Benazir Butto that this flow of arms into India should stop, that this should not be done.

You are giving me a beckoning to stop. But I would only say that my friend Shri Dharam Pal has stated certain things about Kashmir. I will take another opportunity to speak on points regarding Kashmir. There is only one point which I would like to bring to your kind notice. He has mentioned about this, and I wohld take another occasion to elaborate on what the situation is and how it is being misrepresented in India. I will take [illegible] occasion.

Through [illegible] the President's Address, one [illegible] I want to bring to your notice. It is a vital point. Under the Gadgil formula, certain States were declared as "Spelial backward category." In that, certain north-eastern States, Himachal Pradesh and Jammu and Kashmir were categorised. By a subsequent notification by the Government of India, it is was stated that these "Special Category States" would get 90 per cent as grant and 10 per cent as loan. But, unfortunately, while this is the position in the rest of the States including Himachal Pradesh, with regard to Jammu and Kashmir, the position still is that here it is 70 per cent loan and 30 per cent grant only. This materially affects our economy. As my friend also mentioned the figures, our total resources are Rs. 285 crores, and our wage bill for employees alone is Rs. 350 crores. We should be brought at par with those "Special Category States" which have already been declared under the Gadgil formula, and we should be given the same treatment in regard to this also because, Mr. Vice-Chairman, Sir, you can understand that out of Rs. 520 crores grant that we will get as Plan grant allocation this year, Rs. 264 crores are to be paid back by us as capital and interest on the loans that we have already taken. So, what is left there for us in a backward State like Kashmir? Through you I appeal to the Government of India to give the same treatment to Jammu and Kashmir State as to Himachal Pradesh and to certain North-Eastern States.

Sir, I reserve my comments on other points for future, as I will have opportunity to speak on the Budget and on the Appropriation Bill. With this I thank you for giving me an opportunity to speak and support the motion of thanks put forth by Shri Sukul.

श्री शांति त्यागी (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं धन्यवाद प्रस्ताव के पक्ष में बोल रहा हूं और मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे कुछ ज्यादा समय दें। मैं कोई आकड़े आज अपने भाषण में कोट नही करूंगा। [illegible] सरकार का है और राष्ट्रपति के [illegible] मे काफ़ी आंकड़े है, इकोनामिक सर्वे भी है। आज मेरे मन में देश के बारे में जो बात है वह मैं कहूंगा। पहली बात तो यह है कि ज्यों ज्यों चुनाव समीप आएगा मुझे यह लगता है कि प्रतिपक्ष की भूमिका भी बदलती जाएगी। हमे ताज्जुब है कि सी.पी.आई. सी.पी.एम. के लोग, लोकदल के लोग भी वाक आउट में शरीक हो रहे हैं यह बहुत बुरी बात है। लेकिन लगता यह है कि ज्यों ज्यों लोकसभा का चुनाव करीब आएगा इस हाऊस मे भी और लोक सभा मे भी बायकाट का, वाक आउट का क्रम और तेज होगा। ऐसा मुझे लग रहा है।

[उपसभाध्यक्ष (श्री आनन्द शर्मा) पीठासीन हुए]

उपसभाध्यक्ष महोदय, जब किसी पंचायत में, नगरपालिका में, असेम्बली में, संसद में किसी के पास कहने का कुछ नहीं होता है तो कोई न कोई इल्जाम तराशी करने के बाद वह सदन में वाक-आउट करता है। और यही हो रहा है। अब तक मैं 6 साल से यहां पर हूं। जब से पंजाब का मामला पैदा हुआ है आज तक मैं नहीं समझ पाया हूं कि अपोजीशिन पंजाब की समस्या का समाधान क्या करना चाहती है मै आज तक नही जान पाया हूं। राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद आप क्षमा करेंगे बड़ा सेंसेटिव मामला है देश के सामने काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, इसके बारे में अपोजीशन को क्या कहना है, इसका क्या सालूशन है आज तक मै समझ नहीं पाया हूं। अगर गवर्नमेंट कुछ करती है तो यह कहा जाएगा गलत करती है। हम लोग वाक-आउट कर रहे हैं। यही हो रहा है यह बहुत बुरी बात है। मैंने कहा कि वह पार्टी लेफ्ट पार्टीज सी०पी०एम० के लोग, सी०पी०आई के लोग और लोक दल के लोग भी ऐसे टैंटेक्स में फ़ंसते हैं जहां डेमोक्रेसी का उल्लंघन हो और जनवाद की जड़ें कमजोर हों। यह बहुत बुरी बात है। इससे मुझे बड़ी ठेस लगती है। यह तो गांव की पंचायत में भी हो रहा है, नगरपालिका में नगर निगमों में काऊंसलर लोग बैठ कर बात करते हैं, बड़ी मुहब्बत से डिसक्शन करते हैं लेकिन ख्वाहमख्वाह इल्जामतराशी करके वाक आउट करने की कोई परम्परा वहां पर नही है। मैं आज यह कहुंगा कि इस देश ने बहुत तरक्की की है। अपोजीशन के भाई कह सकते हैं कि नंगा भूखा हिन्दुस्तान जो 1947 में हम को मिला आज भी है। वे लोग ऐसा कह सकते है वह यह कह रहे है कि गरीब आदमी और गरीब हो गया और टाटा बिरला और अमीर हो गये। मै दो में से एक बात मानता हूं। टाटा बिरला जरूर मोटे हुए हैं इसमें कोई शक की बात नहीं है लेकिन गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले लाखों करोड़ों आदमी उस रेखा से ऊपर आए हैं इसी बीच में, यह बात मै मानता हूं वह नहीं मानते हैं। मैं यह कह रहा हूं आपसे कि यह सब देश ने तरक्की की है। नयी रचना हो रही है, तालीम आ रही है, नयी नयी योजनाएं चल रही हैं, सचार भी चल रहा है, यातायात चल रहा है, हवाई जहाज बढ़ रहे हैं और नयी टेक्नोलोजी आ रही है साइंस बढ़ रही है कल्चर बढ़ रहा है सब कुछ हो रहा है स्टेडियम बन रहे है खेलकूद के मैदान बन रहे हैं। देश में बहुत कुछ हुआ है। और अभी बहुत कुछ होना बाकी है। लेकिन मैं आपसे एक प्रश्न करूंगा और वह यह है कि क्या यह भी आज हमारे सामने है कि नहीं, कि देश को तोड़ने की भी बहुत

[श्री शांति त्यागी]

साजिशें हो ही हैं । देश की रचना न हो, विकास न हो, डेवलपमेंट न हो टैकनालाजी न आये और देश में अराजकता फैले, मारामारी फैले, क्षेत्रवाद फैले, जातिवाद फैले, टेरेरिज्म फैले, यह भी हो रहा है कि नहीं हो रहा है । यह हो रहा है और इसमें देश के लोग भी हैं । यह कहना कि बिल्कुल नहीं है, असत्य है और इसमें विदेशी बहुत हैं और उनका नाम लेने में शर्म नहीं आनी चाहिए । मुझ नहीं है । अमेरिका में ऐसी ताकतें है जो कभी भी, मुझे पक्का विश्वास है कि हम कितना भी कुछ करें और माननीय राजीव गांधी वहां गये है और हमेशा मैत्री की भावना को रखा हैं, उनका दिल बहुत साफ है, उनकी मंशा भी साफ हैं, वे शांति की कल्पना करते हैं कोशिश कर रहे हैं, बहुत बडा काम है, हमारे देश का मान बहुत ऊंचा उठाया है और राजीव जी ने उन्हें बहुत समझाया लेकिन अमेरिका बाज नहीं आ रहा है यह मेरी बात आप मानें । अमेरिका के मन में भारत के हित की बात नहीं है और देश में कहीं भी कुछ हो हमारे पड़ोस में हो, कहीं पाकिस्तान में कुछ हो, कहीं देश में कुछ हो, आतंकवाद की बात हो, देश के अपमानित होने की बात हो, कमजोर होने की बात हो, कहीं न कहीं सी. आई. ए. का हाथ अमेरिका का हाथ जरुर होता है । आपको विदेश नीति के बारे में सोचना चाहिए । मैं नहीं कह रहा हूं कि संबंध विच्छेद कर लीजिए । मैं नहीं कह रहा हूं कि भारत सरकार अमेरिकी को सुबह शाम गालियां दे. ठीक बात नहीं है । उस बात को आप पकड़ ले, अब वक्त आ गया है कि अमेरिका लोगों मतलब वहां की जनता से नहीं, सरमायेदारों की जंगखोरों की जो नीति है उसके बारे में एक दफा पक्का विचार बना लीजिए ।

आप सुनें भारत सरकार भी सुनें मैं इस सदन में यह कहूंगा कि देश की एकता और इसकी अखण्डता को तोड़ने वाली साजिशें चल रही हैं और राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के बवण्डर उठे हुए हैं जब तक ये मामलात हल नहीं होंगे और इस से भी बड़ा एक मामला हैं, जब तक जनसंख्या का मामला हल नहीं होगा देश का विकास आप कितना भी कर खेती में, उद्योग में साइंस में, टेक्नालांजी में और कहीं भी, हाउसिंग में यह देश तरक्की की उन मंजिलों को नहीं छू सकता हैं जो इसे छूनी चाहिए । पापुलेशन का मामला और एक यह--देश अंदर जबान को, मजहब को, क्षेत्र को, जाति को, बिरादरी को लेकर जो झगड़े पैदा किये जा रहे हैं बैरूनी ताकतों के जरिये और अंदर के लोग भी मिले हुए हैं--इनकी रोकथाम कीजिए तब जो डेवलपमेंट होगा वह आपके काम आयेगा पापुलेशन कंट्रोल कीजिए और यह कीजिए तब देश का भविष्य उज्जवल हैं वरना इसमें गड़बडी है यह एक बात मैं कहना चाहता हूं ।

दूसरी बात मैं किसानों के बारे में कहूंगा । आप मुझे क्षमा करें । राष्ट्रपति जी ने खेती के बारे में बहुत बातें कहीं । राजीव गांधीजी चौबीसों घंटे किसानों के बारे में कह रहे हैं, सोच रहे हैं । बड़ी योजनाएं उनके मन में हैं और कर रहे हैं । लेकिन फिर भी उपसभाध्यक्ष जी जब कभी आप किसानों की--सदन में या कहीं भी बात करते है, गवर्नमेंट बात करती है--कोई मांग पूरी करते हैं गन्ने के रेट बढ़ाने की या कोई और तो ऐसा मालूम पड़ता है जैसे आप कोई खैरात बांट रहे है । किसानों के प्रति यह भावना छोड़ देनी चाहिए । किसानों ने कांग्रेस को ताकत दी है, कौमी तहरीक आजादी की तहरीक किसानों की ताकत से है और उनके पार्टीसिपेशन से देश में एक फिजा पैदा हुई है और हम आजाद हुए थे । तब यह बात कहना कि अच्छा आठ आने दाम बढ़ा दो गन्ने के या 20 पैसे दाम गन्ने के बढ़ा दो, तो क्या ये कोई भीख मांग रहे थे। देश के किसान भिखारी नहीं हैं । देश के किसान मक्का पैदा

करे गेहूं पैदा करे, चावल पैदा करे, आलू पैदा करे, सब्जी पैदा करे, जो काम टाटा बिड़ला नहीं कर सकते वह काम वे करें। . . .टाटा साहब जो है, वह 4.00 P.M. गेहूं का एक दाना भी पैदा नहीं कर सकते है । बिरला जी तो इस समय हाऊस मे नहीं है—वह मुर्जी पैदा कर दें चावल पैदा कर दें—यह उनके बस की बात नहीं है । यह सब किसान पैदा करता है । इसलिए भी किसान को आप भिखारी मत समझिये । वह देश को अनाज देता है और खिलाता है और उसके बच्चे, लड़के जो हैं बच्चे सीमा पर प्रहरी बने खड़े है । वही श्री लंका में भी हैं । हमारी गुड-विशेज उनके साथ हैं और हम उनको मुबारक-बाद देते हैं ।

मैंने यह बात कही कि किसान को भिखारी मत समझें कि गन्ने के मूल्य के लिए किसान जब आंदोलन करेगा तो आठ आने मूल्य बढ़ा दिया । यह काम मत कीजिए । किसान का अधिकार है अपने हक को मांगना और वह इस हाऊस प्रधान मंत्री जी और राष्ट्रपति जी का फर्ज है कि वह उनकी बात सुनें । हक मांगना उसका अधिकार है ।

आज देहातों में काम तो हो रहा है मगर किसान को अपने पास बिठाइये । जब उसकी गेहूं, गन्ने, कपास और तिलहन के दाम तय हों उस वक्त उसे भी अपने पास बिठाइये तो सही । हमारे आई० ए०एस० के लोग भी रहेंगे वैज्ञानिक भी रहेंगे, मगर आई०ए०एस० के साथ किसान की बुद्धि भी बिठाइये और दोनों मिल कर भाव के बारे में तय करें ।

एक और बात जो मैं कहना चाहूंगा जो मेरे मन में है कि राजीव गांधी जी हमारे देश के नेता हैं हमारी पार्टी के नेता है हमारे देश का भविष्य उनसे जुड़ा हुआ है । यह बात सही है कि पंचायती राज को वह गांव में ले गये उत्तर प्रदेश में पंचायतों के, नगरपालिकाओं, महापालिकाओं और नोटिफाईड एरिया कमेटी के चुनाव हुए—यह सब हो गये । मगर एक चीज देखने में आई है कि एक अढ़ाई-तीन हजार की आबादी वाले गांव के लिए एक प्रधान निर्वाचित हुआ और एक प्रधान के इलेक्शन पर एक-एक लाख रुपया खर्च हो रहा है, जहा पहले पांच सौ रुपये मे चुनाव होता था ।

मै आपको एक बात और बताडूं कि महापालिकाओं के चुनाव में—कार-पोरेशंस के सभासदों को खरीदने में—मेयर जो बना था, मेयर के जो उम्मीदवार थे—उन्होंने अढ़ाई-अढ़ाई तीन-तीन लाख रुपया खर्च किया । यह पंचायती राज जो आज जा तो रहा है शहरों में, गांवों में लेकिन भेज कहा रहे हो ? लखपति के पास, सरमायेदार के पास, टाटा के पास, कहां भेज रहे हो, ये बताइये ? एक लाख रुपया कौन खर्च करेगा ? गांव का हरिजन तो खर्च नहीं कर सकता, गरीब मजदूर का लड़का प्रधान पद को कैसे ग्रहण करेगा, क्योंकि एक लाख रुपया उसके पास नहीं है ।

इसी तरह से शहर में मेयर और नगरपालिका का चैयरमेन कौन बनेगा ? गरीब का बेटा कैसे बनेगा क्योंकि दस बीस लाख रुपया उसके पास नहीं है ।

इसलिए मैंने कहा कि जहां राजीव गांधी गरीबों में पावर, पैसे की और शक्ति भी बांट रहे हैं वहां हम सब का भी फर्ज है कि उनके हाथ मजबूत करें और देखें कि पावर वहीं जानी चाहिए । आज पैसे के बारे में वह कहते हैं कि मैं उनके लिये पैसा रिलीज़ करता हूं लेकिन उन तक वह पहुंचता नहीं है । इसी प्रकार वह ताकत देना चाहते हैं सरकार की ताकत भी गरीब के पास मगर वह कहीं बीच में न रह जाए ।

इसलिए मैंने कहा कि यह आज की बड़ी समस्याएं है पापुलेशन की बात मैंने आपसे कही किसान के भाव की

[श्री शांति त्यागी]

बात कही और किसानों के प्रति सरकार के बर्ताव की बात कहीं और मैंने अपराधीकरण की बात कही और चुनाव में पैसे की बढ़ती हुई ताकत की बात कही है ।

एक अंतिम बात जो मैं आपसे कहना चाहूंगा वह यह है कि आज सब भाई आर्थिक विकास की बात कर रहे है । आर्थिक विकास के साथ जो बातें मैंने आपसे कहीं हैं यह बड़ी विचारणीय है और कभी-कभी मुझे डर लगता है कि देश में क्या कुछ हो जाएगा । एक बात यहां से उठी और वह अंडेमान तक पहुंची । हम लोग अन्डेमान-निकोबार में गए । वहां भी यह मामला है । है । इसलिए मैंने कहा कि कहीं न कहीं देश में कुछ लोग ऐसे काम कर रहे हैं देश के विघटन के लिए काम कर रहे हैं । इसलिए इन तमाम बातों को अपनी जनता के बीच में ले जाइये ताकि एक नया जागरण हो और देश की सरकार का वह कर्तव्य है कि उस काम को पूरा करे ।

इन शब्दों के साथ माननीय मुकुल जी ने जो धन्यवाद का प्रस्ताव पेश किया है उसका मैं अनुमोदन करता हूं और उसके पक्ष में अपने विचार व्यक्त करता हूं । धन्यवाद ।

PROF. (MRS.) ASIMA CHATTERJEE (Nominated): Thank you, Mr. Vice-Chairman, Sir, for giving me this opportunity to speak on the Motion of Thanks on President's Address moved by our hon. colleague, Mr. P. N. Sukul.

Sir, the President's Address is a comprehensive and a self-contained document covering all the important aspects as far as Government's policies are concerned. In fact, I think that the Address is a critical analysis and review of the achievements of the country during the year 1988-89 and it has also been mentioned by the hon. President as to what future action should be taken to give thrust to the country's further development and economic growth to attain the desired goals. Actually, the dream of Pandit Jawaharlal Nehru whose birth centenary we are celebrating was to build up a better and stronger India and the contributions made in this context by his illustrious daughter, Shrimati Indira Gandhi, deserve special mention. In fact, India's basic policy frameworks fashioned by Jawaharlal Nehru were introduced with great success through the planning process, the key elements of that strategy, with a new vitality by Mrs. Gandhi with renewed emphasis on social justice as an integral part of the pattern of growth. Sir, much discussion has been held on democracy, socialism, secularism and non-alignment which were the ideals of Pandit-ji and carefully nurtured by Mrs. Gandhi. I would rather speak on the development of science and technology and on technology missions with special reference to oil and oilseeds and drinking water and the achievements in the field of bio-technology which has been applied for the welfare of man-kind.

Now, coming to oil and oilseeds, the country is going to achieve a record production over 15.5 million tonnes in 1988-89. This is a massive 22 per cent rise over the previous year and this will result in considerable easing of the strain on foreign exchange reserves which are under severe pressure because of edible oil and oilseeds import of an annual average of Rs. 1000 crores. This will also relieve the strain due to the balance of payments in terms of foreign exchange. And this reflects the achievements of the technology mission on oil and oilseeds; thanks to the farmers who have responded well to the moves for the adoption of modern technology and also for utilising the optimum climatic conditions, ecological conditions, for enhancing the productivity of not only oilseeds but also various other crops. They are learning to modernise storage and processing technologies. And the irrigation and other facilities provided by the Gov-

ernment have been extremely helpful to the farmers for increasing the agricultural produce. The Government of India are going to provide incentive prices, I understand, and suitable finance through the NABARD which is already helping the farmers. The NABARD is an apex refinancing agency for the promotion of agriculture, small-scale industries, cottage and village industries, handicrafts and other rural crafts and other allied economic activities in rural areas for the upliftment of rural masses who constitute 80 per cent of the total population. Coming to biotechnology it is receiving wide application not only in agriculture but also in health care. Biotechnology is being increasingly applied in the field of agricultural produce. Biotechnology has proved also very helpful in the area of medical science. An entire new generation of drugs and better quality of drugs have been experienced, for example, insulin production. Biotechnology holds great promise for the future as this will help produce drugs like insulin in large quantities within a small time with micro organisms.

Science and technology has made wonderful progress in the areas of atomic energy and space. Atomic energy is not only a source of power; many useful medicines have also been discovered for the treatment of dreadful diseases like goitre and cancer. Considering the application of science and technology in space research, INSAT I-B and the recently launched Indian Remoting Sensing Satellite IRSI-A are regarded as excellent examples of successful technological missions. INSAT I-B has brought a virtual revolution in communication e.g., a total of 74 Transit Telecommunication Terminals providing some 4000 two-way telephone circuits, 100 unattended meteorological data collection platforms, a fleet of 100 disaster warning sets, a national TV service providing some 250 TV stations. The second IRSI-A carrying three cameras to image the earth from a height of 900 kms is providing pictures of a remarkable resolution. Another important contribution arising out of R and D process with the application of science and technology is MST radar. Universities, CSIR laboratories and other institutions have developed MST radar which will operate as a national facility providing major opportunities for atmospheric research to Indian astronomers. It is the only instrument that can observe under all weather conditions and can sample the atmosphere at short-time intervals. The telecommunication revolution is another breakthrough in research and development process. The backbone would be the integrated surface digital network, ISDN. So far as technology mission for drinking water is concerned, the major breakthrough has been on desalination, the process being developed by CSIR laboratories. Low-cost housing technology is also another development which will be extremely useful for our rural masses and which will provide housing accommodation to thousands of rural people who are living in a very bad condition in mud and thatched houses. However, more efforts should be made particularly for the unemployed youth and also for the unemployed as their number is increasing gradually; therfore, care must be taken for vocationalisation of training and for courses on self-employment so that the people themselves can be self-dependent and create jobs. Now, all these achievements have been possible on account of the vision of Jawaharlal Nehru who moved a Science Policy Resolution in March 1958. He could visualise the defence of India's sovereignty and integrity and Indian development as a modern India be possible with the development of science and technology. This will bring self-reliance, this will bring economic growth and prosperity of the country and will help the welfare of the people at large. However, we must confess that in spite of the fact that the Government of India has been spending so much money, in spite of the fact that the Govrenment of India has been making efforts in developing many devices, it

[Prof. (Mrs.) Asima Chatterjee]

has not been possible for us to control the population explosion. In spite of serious efforts it has not been possible to control the population growth which has actually marred our progress to some extent. Depite the population explosion and despite the natural calamities like drought and floods, the country has made considerable progress which has been highlighted in the Address of the President and we must all agree that this is really a satisfactory picture. However, there has been a setback in our imports and exports because of the falling value of the rupee and because of this devaluation of the rupee the balance of payment position is becoming difficult. So, we must try, the Government must try, to look into the matter and find out why our rupee is getting devalued. Therefore, steps should be taken to raise the value of the rupee so that our imports and exports do not suffer and we can earn a lot of foreign exchange and we can readily pay our debts to the World Bank.

Sir, I am confident that with the background of our millennial civilization which has been mentioned categorically by our honourable President, with our perception of universal brotherhood and with united efforts, it would be possible for us to build up a better and stronger India which was the dream of Pandit Jawaharlal Nehru and which our beloved former Prime Minister, Shrimati Indira Gandhi tried to fulfil. Actually, she tried to develop the country according to his guidelines and tried to give a realistic picture of his dreams. But, unfortunately, due to her sudden demise and tragic end, there was a setback. But I thing our Prime Minister, with serious efforts, is steering the country in the right direction and it is my firm opinion.

With these words, Sir, I would like to conclude, supporting the Motion of Thanks moved by Mr. Sukul. Thank you, Sir.

श्री मुहम्मद अमीन अंसारी (उत्तर प्रदेश) : उपाध्यक्ष महोदय, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर श्री पी० एन० सुकुल जी ने जो धन्यवाद का प्रस्ताव रखा है, मैं उसका भरपूर समर्थन करता हूं ।

महोदय, मुझे राष्ट्रपति जी के अभिभाषण से खुशी हुयी । मुल्क और कौम की खुशहाली तरक्की और फलाह-व-बहबूद रोशन दिखाई पड़ता है । महोदय, गरीब, मेहनतकश आवाम के मसीहा, मुल्क और कौम के अजीम रहनुमा, अजीम मेमार, आंजहानी पंडित जवाहर लाल नेहरू का सदसाला वर्ष मनाया जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि यह साल मुल्क और कौम की तरक्की और खुशहाली की मंजिल की तरफ आगे बढ़ेगा ।

महोदय, हमारी प्रिय नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने बीस नुकाती प्रोग्राम का एलान करके एक मिशाली कदम उठाया उनकी जद्दोजेहाद रही कि मुल्क खुशहाल हो, मुल्क और कौम का बकार बुलन्द हो, बेकारी व बेरोजगारी दूर हो और लोग अमन-शांति से रह सकें । मगर हत्यारों ने हमको उनसे जुदा कर दिया और दुनिया गम में डूब गयी । ऐसी हालत में मर्देआहंग, बुलन्द इरादों वाले जवान, बहादुर राजीव गांधी जी के कंधों पर वजीरे आजम का बोझ पड़ा । वे बड़ी हिम्मत और हौसले के साथ मुल्क की मसायल हल करने में कामयाबी हासिल करते चले आ रहे हैं । मान्यवर, इस कामयाबी को कुछ फासिस्ट ताकतें बर्दास्त नहीं कर पा रही हैं । कभी जाति-बिरादरी, धर्म-मजहब के खोखले नारे और फिरकापरस्ती का माहौल कायम करके मुल्क का बजार गिराना चाहते हैं। मुल्क में अमन और शांति को बर्बाद करने के पीछे पड़े हुए हैं ।

ऐसी ताकतों को वह चाहे जिस धर्म, मजहब या समुदाय को हों उन लोगों पर पाबन्दियां लगानी चाहिये जो एक-दूसरे के दिलों में नफरत पैदा कर रही हैं।

मान्यवर, वक्त कुछ कम है। हमारे मुल्क के जो मआशी और इकतसादी हालात है, जो दस्तकार तबका है राष्ट्रपति के अभिभाषण से उम्मीद संबंधी है कि कुछ उसको राहत मिलेगी, गसगर मरकजी सरकार चाहती है कि इन गरीब और मेहनतकश तबकों को ऊपर उठाया जाये। मिसाल के तौर से हैंडलूम हिन्दुस्तान की खेती के बाद सबसे बड़ी सन्नत है और आज यह बर्बादी और तबाही के कगार पर खड़ी हो गयी है।

मान्यवर, रूई इस साल मुनासिब पैदा हुई और उसका रेट भी कम है, मगर यह मिल चाहे हमारी सरकारी कताई मिल हो चाहे सहकारी हो या प्राइवेट सो चाहे एन०टी०सी० की हो ये मिलें भरपूर मुनाफा लेकर के बुनकरों का शोषण कर रही है। अभी पिछले बजट में लगभग 30 फीसदी एक्साइज की छूट दी गयी थी, जो टेरिकाट और दूसरे जो धागे थे, वहां के मिल-मालिकों ने निजी फायदा उठाया और गरीब बुनकरों को उनका दाम नहीं दिया। पावरलूम सन्नत को मिल वाले दबा रहे हैं। आज मैं कहने की जुर्रत करता हूं कि 1100 करोड़ रुपया एन.टी.सी. मिलों में घाटा जा रहा है, तो क्यों उन मिलों को चालू रखा गया? मेरा आपके द्वारा यह कहना है कि उन मिलों को बन्द कर दिया जाये और उनके सामान को बेचकर के उनमें जो मेहनत करने वाले लोग है उनके हिसाब से उनको बोनस वगैरह देकर के नई किस्म की मशीन लगाकर के धागा बनाने का काम करें और कपड़े का काम पावरलूम को दे दिया जाये, क्योंकि 6 लाख से ज्यादा पावरलूम इस हिन्दुस्थान के अंदर हैं, तो उनको भी मौका मिले, रोटी-रोजी का रास्ता निकले। अगर ये पावरलूम न होते तो यह मिलें वाले पिछले साल जो हड़ताल करवा दिये थे एक-एक मीटर कपड़े के लिये लोग तरस जाते। पावरलूम ने उनकी तनपोशी की। तो इस पर खास तौर से ध्यान देने की जरूरत है।

मान्यवर मैं कहना चाहता हूं कि एक रेशम उद्योग है। रेशम हिन्दुस्तान के अन्दर कर्नाटक पैदा कर रहा है ज्यादा से ज्यादा मगर उन्होंने इतने दाम बढ़ा दिये हैं कि आज हैंडलूम का बुनकर वह कपड़ा नहीं तैयार कर पा रहा है। मिसाल के तौर पर जो रेशम 18–20, 20–22, 20–24 डिनिया का रेशम था 650 रुपये प्रति किलो आज उसकी कीमत बारह सौ साढ़े बारह सौ रुपये किलो हो गया है जिसकी वजह से कपड़े की निकासी बन्द हो गयी है। आवाम पर इसका सीधा-साधा बोझ पड़ रहा है। रेशम हमारे यहां ज्यादा पैदा नहीं होता, चीन से रेशम आता है और चीन ने रेशम देना बन्द कर दिया है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि किसानों को 3000, 4000 रूपय की सबसिडी फी एकड़ दी जाये ताकि वह अपने इलाके में रेशम उत्पादन में आगे बढ़ सकें और हम अपना फारेन एक्सचेंज बचा सकें और हम चीन के मोहताज न रह सकें और खास तौर से मैं उत्तर प्रदेश के बारे में कहना चाहता हूं कि वहां 65 हजार से ज्यादा हथकरघे हैं और वहां रेशम की बड़ी हा-हाकार मची हुई है और वह दस्तकारा जो दुनिया के अन्दर अपनी दस्तकारी की मिशाल कायम किये हुए हैं और दुनिया उसके कपड़े को पसन्द करती है आज वह दस्तकारी खतम हो रही है। मान्यवर उसको बचाया जाये और हिन्दुस्तान के अन्दर रेशम उत्पादन का सिलसिला शुरू होना चाहिये। हमारे उत्तर प्रदेश के अन्दर कपास की पैदावार नहीं होता। वहां के किसानों को सबसिडी देकर के रुई पैदा करने के

[श्री मुहम्मद अमीन अंसारी]

लिये उनको प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

माननीय, अभी हमारे भाई डा० रत्नाकर पाण्डेय जी कह रहे थे कि कालीन दुनिया के कोने-कोने में जा रहे हैं। कालीन का हमारा मुकाबला पाकिस्तान से है ईरान से है नेपाल से है। इन सारे मुल्कों से हमारा तिजारती मुकाबला है। आज हिन्दुस्तान में जो कालीन बन रहा है मिशाल के तौर से मिर्जापुर और बंदोही, वाराणसी में यहां पर 150 करोड़ रुपये का एक्सपोर्ट होता है। आज यह तबका भी परेशानी में मुब्तला हो गया है। ऊन के भाव बढ़ गये हैं। ऊन पैदा करने वाले धागा बनाने वाले राजस्थान के अन्दर बड़े-बड़े गोदामों में जखीरे अंदोजी कर रहे हैं और मनचाहे भाव बढ़ा देते हैं। कालीन बनाने वालों के लिये इससे परेशानी हो जाती है और दुनियां के मुकाबले में उनका माल मंहगा पड़ने लगता है। मैं गुजारिश करूंगा कि न्यूजीलैण्ड का ऊन यहां इम्पोर्ट करके सस्ता धागा बनाकर कालीन बनाने वाले को दिया जाये और जो काटन यार्न उसमें लगता है वह उत्तर प्रदेश के मिलों में बनवाकर सस्ते दामों पर उनको दिया जाय।

[उपसभापति पीठासीन हुई]

महोदया, दस्तकारों के बारे में मैं कहना चाहता हूं कि लकड़ी, नक्काशी और पीतल की सनात में तबाही आ गई है, इसके उनको बचाया जाए, पहले आर्मी की तरफ से पीतल नीलाम करके गरीब दस्तकारों को उपलब्ध कराया जाता था लेकिन आज बड़े लोगों को वह मिलता है और गरीब दस्तकारों और भिट्टी लगाने वालों को पीतल नहीं मिल रहा है। इसकी व्यवस्था करानी चाहिए।

माननीय मैं एक और बात अर्ज करना चाहूंगा। सरकारी दफ्तरों में, सरकारी इदारों में बड़े-बड़े हमारे अधिकारियों पर फिजूलखर्ची काफी बढ़ गई है। देश को आगे बढ़ाना है, तरक्की और खुशहाली के रास्ते पर ले जाना है तो छोटे-छोटे लोगों को आगे बढ़ाना चाहिए और फिजूलखर्ची पर पाबंदी लगाई जानी चाहिए। कपड़ा, चमड़ा, हैंडीक्राफ्ट का सामान एक्सपोर्ट करने पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। इससे फारेन एक्सचेंज हमको मिलेगा और हमारे उद्योगों को सहूलियत मिलेगी। हमें नए किस्म के दस्तकारी के सामान आज के जमाने के मुताबिक बनाने के लिए कोशिश करनी चाहिए ताकि हम दुनियां के मुल्कों में अपनी तिजारत को बढ़ा सकें।

महोदया, हमारे हरदिलअजीज वजीरे आजम राजीव गांधी जी ने बेकारी, बेरोजगारी और गरीबी दूर करने के लिए जो प्रोग्राम बनाया है उसमें जो हरिजन हैं, जनजाति या पसमांदा तबके के लोग हैं उनकी खुशहाली के लिए और अबलियत के लिये 15 नुकाती प्रोग्राम बनाकर एक मिसाली कदम उठाया है। लेकिन मुझे अफसोस है कि उसकी रफ्तार बहुत सुस्त है जिससे उस तबके को फायदा नहीं हो रहा है। मैं यह भी गुजारिश करना चाहूंगा कि अबलियती तबके की नौकरियों में आज नजरअंदाज किया जा रहा है, उनको प्रमोशन में भी नजरअंदाज किया जा रहा है। इस ओर भी ध्यान देने की जरूरत है। इस तबके को बेकारी से बचाने के लिये उनके साथ इंसाफ होना चाहिए।

महोदया, हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, इसको फलना-फूलना चाहिए और इसमें ही सरकारी कामकाज होना चाहिए चाहे वह मरुजी सरकार होया सूबाई सरकार हो। साथ ही हिन्दुस्तान की प्यारी जबान उर्दू है उसको भी फलने-फूलने का मौका मिलना चाहिए। इस ओर मरुजी सरकार को ध्यान देना चाहिए।

महोदया, हमारे वजीरे आजम ने अपनी सूझ-बूझ और दानिशमंदी की मिसाल कायम की और मालद्वीप के प्रेसिडेंट की इल्तिजा पर अपनी फौज वहां भेजकर उनको कत्ला-गारद से बचाया। दूसरे मुल्क वाले वहां एयरपोर्ट तक नहीं पहुंच सकते थे,

लेकिन हमारे प्रधान मंत्री ने अपनी फौजें भेजकर उनको बचा लिया। ऐसे ही लंका में जम्हूरियत की बहाली के लिए जो काम हमने किया है उसकी पहल भी प्रधान मंत्री जी ने की। रूस में अमन और शांति का डंका बजाया, चाइना जैसे मुल्क में प्रधान मंत्री ने जाकर दोस्ती का हाथ बढ़ाया और जहां के हुक्मरान और आवाम ने उसको लब्बैक कहा। यह सच बातें है। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की नफरत को हमारे प्रधान मंत्री ने जाकर प्यार मोहब्बत में बदला। आज वहां की आवाम हिन्दुस्तान के आवाम के करीब आना चाहती है। एक अच्छा-सा माहोल बना है उसको बरकरार रखने के लिए उसमें सोच-विचार करने की जरूरत है।

अफगानिस्तान से रूसी फौजों की वापसी में हमारे प्रधान मंत्री का मशविरा बहुत काबिले तारीफ रहा है।

एक बड़ा मिसाली कदम प्रधान मंत्री ने उठाया है। 18 साल की उम्र के लोगों को वोट का राइट देकर। यह एक बहुत बड़ा कारनामा है। आज उन नौ जवानों को मौका मिलेगा कि वह अपनी तबियत से इस मुल्क की जम्हूरियत में अपनी राय दे सकें।

इस देश में पंचायती राज कायम हो इस बात को जमाने से देहातों में, गांवों में, शहरों में गांधी जी कहा करते थे कि स्वराज्य आये तो पंचायती राज होगा। हम अपने बचपन में सुनते थे कि पंडित जवाहरलाल जी इलाहाबाद के गांव प्रतापगढ़ में स्वराज्य, पंचायती राज की बात कहा करते थे। इसका राजा-महाराजा हमेशा मजाक उड़ाया करते थे। पहले आजादी हासिल करने के लिए मजाक उड़ाया करते थे और आज मुल्क आजाद हो गया लेकिन आज उनका अपना रवैया बदला नहीं है। आज पंचायती राज के लिए प्रधान मंत्री जी ने जो प्रोग्राम बनाया है उसमें कहा है खुद गांवगांव में समाज में जिम्मेदार लोग उसकी तरक्की और खुशहाली के लिए, उसके विकास के लिए, उसकी तरक्की और फलाह व बहबूद के लिए काम करें। यह एक मिसाली कदम हमारे प्रधान मंत्री का है। (समय की घंटी) एतराफ करना होगा?

उपसभापति : आप अपना जुमला तो पूरा कर लीजिए। इसमें कोई मनाही नहीं है।

श्री मुहम्मद अमीन अंसारी : मैं यह कह रहा था कि यह साल हमारी तरक्की और खुशहाली का होगा।

एक बात और आपके जरिये से कहना चाहता हूं कि कुछ ऐसी पार्टियां और समाज बन गये है जो दिलों में नफरत पैदा करने की सरगर्मी से लगे हुए हैं। एक तबका है जिसे चाहे हिन्दू परिषद् कहा जाए या आर० एस० एस० कहा जाए या कुछ और कहा जाए। गांव-गांव में घूम कर मन्दिर बनाने के लिए और किसी मस्जिद को तोड़ने के लिए एक ईंट की फर्माइस की है। चाहे गांव का हिन्दू हो या मुसलमान हो वह अमन पसन्द है। एक दूसरे की इज्जत करता है, धर्म की, मजहब की इज्जत करता है। आज भी मिसाल है कि ईद के रोज हिन्दू जाते हैं सेवियां खाने और होली के दिन मुसलमान जाते हैं हिन्दुओं से गले मिलने। जो हमारे देश की परम्परा बनी हुई है उसको तोड़ रहे है। देश की तरक्की और खुशहाली के रास्ते पर, अमन और शांति के रास्ते पर लाने के लिए, हिन्दुस्तान के अजमतो वकार को बुलन्द करने के लिए राजीव गांधी आये है वह उनसे बर्दाश्त नहीं हो रहा है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि ऐसी ताकतों को पनपने न दिया जाए। उन पर पाबंदी लगे, प्यार-मोहब्बत का माहोल रहे जिससे मुल्क तरक्की के रास्ते पर आगे बढ़ सके और इस मुल्क का वकार बुलन्द हो सके। शुक्रिया।

کے کندھوں پر وزیراعظم کا بوجھ پڑا - وہ بڑی ہمت اور حوصلے کے ساتھ ملک کے مسائل حل کرنے میں کامیابی حاصل کرتے چلے آ رہے ہیں - مانیہور - اس کامیابی کو کچھ فاسسٹ طاقتیں برداشت نہیں کر پا رہی ہیں - کبھی ذات برادری- دھرم مذہب کے کھوکھلے نعرے اور فرقہ پرستی کا ماحول قائم کرکے ملک کا وقار کرانا چاہتے ہیں ملک میں امن اور شانتی کو برباد کرنے کے پیچھے پڑے ہوئے ہیں - ایسی طاقتوں کو رہ چاہے جس دھرم - مذہب یا سمودائے کی ہوں - ان لوگوں پر پابندیاں لگانی چاہئے جو ایک دوسرے کے دلوں میں نفرت پیدا کر رہی ہیں -

مانیہور - وقت کچھ کم ہے - ہمارے ملک کے جو معاشی اور اقتصادی حالات ہیں جو دستکار طبقہ ہے - راشٹر پتی کے ابھیبھاشن سے امید بندھی ہے کہ کچھ اسکو راحت ملےگی - مگر مرکزی سرکار چاہتی ہے کہ ان غریب اور محنت کش طبقوں کو اوپر اٹھایا جائے - مثال کے طور سے ہینڈ لوم ہندوستان کی کھیتی کے بعد بڑی صنعت ہے - اور آج یہ بربادی اور تباہی کے کگار پر کھڑی ہو گئی ہے -

مانیہور - روئی اس سال مناسب پیدا ہوئی اور اسکا ریٹ بھی کم ہے-

†[شری محمد امین انصاری

(اتر پردیش) : اپ سبھا ادھیکھ، مہودے - راشٹر پتی جی کے ابھیبھاشن پر شری بی - این - سکل جی نے جو دھنیہواد کا پرستاؤ رکھا ہے - میں اسکا بھرپور سمرتھن کرتا ہوں -

مہودے - مجھے راشٹر پتی جی کے ابھیبھاشن سے خوشی ہوئی- ملک اور قوم کی خوش حالی ترقی اور فلاح و بہبود کا مستقبل درشن دکھائی پڑتا ہے - مہودے - غریب محنت کش عوام کے مسیحا - ملک اور قوم کے عظیم رہنما - عظیم معمار - آنجہانی پنڈت جواہر لال نہرو کا صد سالہ ورش منایا جا رہا ہے - مجھے امید ہے کہ یہ سال ملک اور قوم کی خوش حالی کی منزل کی طرف آگے بڑھےگا -

مہودے - ہماری پریئے نیتا شریمتی اندرا گاندھی جی نے بیس نکاتی پروگرام کا اعلان کرکے ایک مثالی قدم اٹھایا - انکی جدوجہد رہی کہ ملک خوش حال ہو - ملک اور قوم کا وقار بلند ہو - بیکاری و بےروزگاری دور ہو اور لوگ امن شانتی سے رہ سکیں - مگر ہتیاروں نے ہم کو ان سے جدا کر دیا اور دنیا غم میں ڈوب گئی - ایسی حالت میں مرد آہنگ - بلند ارادوں والے جوان - بہادر راجیو گاندھی جی

†[ ]Transliteration in Arabic script.

مگر یہ مل چاہے ہماری سرکاری کتائی مل ہو چاہے سرکاری ہو یا پرائیویٹ ہو - چاہے این - ٹی - سی - کی ہو - یہ ملیں بھرپور منافع لیکر بنکروں کا شوشن کر رہی ہیں - ابھی پچھلے سال بجٹ میں لگ بھگ ۳۰ فیصدی ایکسائز کی چھوٹ دی گئی تھی جو ٹیریکاٹ اور دوسرے جو دھاگے تھے وہاں کے مل مالکوں نے نجی فائدہ اٹھایا اور غریب بنکروں کو انکا دام نہیں دیا- پاور لوم صنعت کو مل والے دبا رہے ہیں - آج میں کہنے کی جرأت کرتا ہوں کہ ۱۱۰۰ کروڑ روپئے این - ٹی - سی - ملوں میں گھاٹا جا رہا ہے - تو کیوں ان ملوں کو چالو رکھا گیا - میرا آپ کے دوارا یہ کہنا ہے - کہ ان ملوں کو بند کر دیا جائے اور انکے سامان کو بیچ کرکے ان میں جو محنت کرنے والے لوگ ہیں انکے حساب سے انکو بونس وغیرہ دیکر کے نئی قسم کی مشین لگاکر کے دھاگے بنانے کا کام کریں - اور کپڑے کا کام پاور لوم کو دیا جائے - کیونکہ ۶ لاکھ سے زیادہ پاور لوم اس ہندوستان کے اندر ہیں تو انکو بھی موقع ملیگا - روزی روٹی کا راستہ نکلے - اگر یہ پاور لوم نہ ہوتے تو یہ مل والے پچھلے سال جو ہڑتال کروا دئے تھے - ایک ایک میٹر کپڑے کیلئے ترس جاتے - پاور لوم نے ان کی تن پوشی کی - تو اس پر خاص طور سے دھیان دینے کی ضرورت ہے -

مانیور - میں کہنا چاہتا ہوں کہ ایک ریشم ادیوگ ہے- ریشم ریشم ہندوستان کے اندر کرناٹک میں پیدا ہوتا ہے - زیادہ سے زیادہ مگر انہوں نے اتنے دام بڑھا دیئے ہیں کہ آج کا ہینڈ لوم کا بنکر وہ کپڑا نہیں تیار کر پا رہا ہے - مثال کے طور پر جو ریشم اٹھارہ بیس- بیس بائیس - بس چوبیس جتنا کا ریشم تھا وہ ۱۵۰ روپئے پرتی کلو آج ابھی قیمت بارہ سو ساڑے بارہ سو روپئے کلو ہو گئی ہے - جسکی وجہ سے کپڑے کی نکاسی بند ہو گئی ہے- عوام پر اسکا سیدھا سیدھا بوجھ پڑ رہا ہے - ریشم ہمارے یہاں زیادہ نہیں ہوتا - چین سے ریشم آتا ہے- اور چین نے ریشم دینا بند کر دیا ہے - میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ کسانوں کو ۴۰۰۰ - ۳۰۰۰ روپئے کی سبسڈی دی جائے تاکہ وہ اپنے علاقے میں ریشم اتپادن میں آگے بڑھ سکیں - اور ہم اپنا فارن ایکسچینج بچا سکیں - اور ہم چین کے محتاج نہ رہ سکیں اور خاص طور پر اتر پردیش کے بارے میں کہنا چاہتا ہوں کہ وہاں پیلستھو ہزار سے زیادہ ہتھکرگھے ہیں- اور وہاں ریشم کی بڑی بھاری کار مچی ہوئی ہے اور وہ دستکار جو دنیا کے اندر اپنی دستکاری کی مثال قائم کئے ہوئے ہیں اور دنیا

اسکے کھڑے کو پسند کرتی ہے - آج وہ دستکاری ختم ہو رہی ہے - مانیہ ور - اسکو بچایا جائے - اور ہندوستان کے اندر ریشم اتپادن کا سلسلہ شروع ہونا چاہئے - ہمارے اتر پردیش کے اندر کپاس کی پیداوار نہیں ہوتی - وہاں کے کسانوں کو سبسڈی دے کر روئی پیدا کرنے کیلئے انکو پروتساہت کیا جانا چاہئے -

مانیہ ور ابھی ہمارے بھائی ڈاکٹر رتناکر پانڈے جی کہہ رہے تھے کہ قالین دنیا کے کونے کونے میں جا رہے ہیں - قالین کا ہمارا مقابلہ پاکستان سے ہے - ایران سے ہے - نیپال سے ہے - ان سارے ملکوں سے ہمارا انترراشٹریہ مقابلہ ہے - آج ہندوستان میں جو قالین بن رہا ہے - مثال کے طور سے مرزا پور اور بھدوہی - وارانسی میں یہاں پر ۱۵۰ کروڑ روپئے کا ایکسپورٹ ہوتا ہے - آج یہ طبقہ بڑی پریشانی میں مبتلا ہو گیا ہے - اون کے بھاؤ بڑھ گئے ہیں - اون پیدا کرنے والے - دھاگے بنانے والے راجستھان کے اندر بڑے بڑے گوداموں میں ذخیرہ اندوزی کر رہے ہیں - اور من چاہے بھاؤ بڑھتا دیکھ رہے ہیں - قالین بنانے والوں کے لئے اس سے پریشانی ہو جاتی ہے - اور دنیا کے مقابلے میں ان کا مال مہنگا پڑنے لگتا ہے - میں گزارش کرونگا کہ نیوزی لینڈ کا اون یہاں امپورٹ کرکے سستا دھاگہ بناکر قالین والوں کو دیا جائے - اور جو کاٹن یارن اس میں لگتا ہے وہ اتر پردیش کے ملوں میں بنواکر سستے داموں پر انکو دیا جائے -

[اپ سبھاپتی پیٹھ آسین ہوئیں]

مہودیہ - دستکاری کے بارے میں میں کہنا چاہتا ہوں کہ لکڑی - نقاشی اور پیتل کی صنعت میں کمی آگئی ہے - اس سے انکو بچایا جائے - پہلے آدمی کی طرف سے پیتل نیلام کرکے غریب دستکاروں کو اپلبدھ کرایا جاتا تھا : لیکن آج بڑے بڑے لوگوں کو وہ ملتا ہے اور غریب دستکاروں اور بھٹی لگانے والوں کو پیتل نہیں مل رہا ہے اسکی ویوستھا کرانی چاہئے -

مانیہ میں ایک اور بات عرض کرنا چاہتا ہوں - سرکاری دفتروں میں سرکاری اداروں میں بڑے بڑے ہماری ادھیکاریوں پر فضول خرچی کافی بڑھ گئی ہے - دیش کو آگے بڑھانا ہے - ترقی اور خوش حالی کے راستہ پر جانا ہے - تو چھوٹے چھوٹے لوگوں کو آگے بڑھانا چاہئے - بدلا - آج وہاں کا عوام ہندوستان کے عوام کے قریب آنا چاہتا ہے - ایک اچھا سا ماحول بنا ہے - اسکو برقرار رکھنے کیلئے اسمیں سوچ وچار کرنے کی ضرورت ہے -

افغانستان سے روسی فوجوں کی واپسی میں ہمارے پردھان منتری کا مشورہ بہت قابل تعریف رہا -

ایک بڑا مثالی قدم پردھان منتری نے اٹھایا ہے - ۱۸ سال کی عمر کے لوگوں کو ووٹ کا رائٹ دے کر - یہ ایک بہت بڑا قدم ہے - آج ان نوجوانوں کو موقع ملے گا - کہ وہ اپنی طبیعت سے اس ملک کی جمہوریت میں اپنی رائے دے سکیں -

اس دیش میں پنچایتی راج قائم ہو اس بات کو زمانے سے دیہاتوں میں - گاؤں میں - شہروں میں گاندھی جی کہا کرتے تھے - کہ سوراجیہ آئے تو پنچایتی راج ہوگا -

ہم اپنے بچپن سے سنتے تھے کہ پنڈت جواہر لعل نہرو جی الٰہ آباد کے گاؤں پرتاپ گڑھ میں سوراجیہ پنچایتی ہی کی بات کہا کرتے تھے اسکا راجہ مہاراجہ مذاق اڑایا کرتے تھے - اور آج ملک آزاد ہو گیا لیکن آج انکا اپنا رویہ بدلا نہیں ہے - آج پنچایتی راج کیلئے پردھان منتری جی نے جو پروگرام بنایا ہے - اسمیں کہا گیا ہے - خود گاؤں گاؤں میں سماج میں ذمہ دار لوگ جاکر اسکی ترقی اور خوش حالی کے لئے اسکے وکاس کیلئے اسکی ترقی اور فلاح و بہبودگی کیلئے کام کریں - یہ ایک مثالی قدم ہمارے پردھان منتری کا ہے - [وقت کی گھنٹی] اعتراف کرنا ہوگا -

اپ سبھا پتی : آپ اپنا جملہ تو پورا کر لیجئے - اس کی کوئی منائی نہیں ہے -

شری محمد امین انصاری : میں یہ کہہ رہا تھا کہ یہ سال ہماری ترقی خوش حالی کا ہوگا - ایک بات اور آپ کے ذریعے سے کہنا چاہتا ہوں کہ کچھ ایسی پارٹیاں اور سماج بن گئے ہیں جو دلوں میں نفرت پیدا کرنے کی سرگرمی میں لگے ہوئے ہیں - ایک طبقہ ہے جسے چاہے ہندو پرشید کہا جائے یا آر - ایس - ایس کہا جائے - یا کچھ اور کہا جائے - گاؤں گاؤں میں گھوم کر مندر بنانے کیلئے اور کسی مسجد کو توڑنے کیلئے ایک ایجی ٹیشن کی فرمائش کی ہے - چاہے گاؤں ہندو کا ہو یا مسلمان ہو وہ امن پسند ہے - ایک دوسرے کی عزت کرتا ہے - دھرم کی - مذہب کی عزت کرتا ہے - آج بھی مثال ہے کہ عید کے روز ہندو جاتے ہیں سوئیاں کھانے - اور ہولی کے دن مسلمان جاتے ہیں - ہندوؤں سے گلے ملنے - جو ہمارے یہ پرمپرا بنی ہوئی ہے - اسکو توڑ رہے ہیں - دیش کی ترقی اور خوشحالی کے راستے پر - امن اور شانتی کے راستے پر لانے کیلئے - ہندوستان کے عظمت و وقار کو بلند کرنے کیلئے راجیو گاندھی آئے ہیں - یہ ان سے برداشت نہیں ہو رہا ہے - میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ ایسی طاقتوں کو پنپنے نہ دیا جائے - ان پر پابندی عائد کی جائے - وہ نفرت کا ماحول پیدا نہ کریں -

پیار محبت کا ماحول رہے - جس ملک ترقی کے راستہ پر تیزی سے آگے بڑھ سکے - اور اس ملک کا وقار بلند ہو سکے - شکریہ -]

KUMARI SHILA TIRIA (Orissa): Thank you, Madam, for giving me this opportunity.

Madam, I rise to support the Motion of Thanks moved by Shri Sukul for the Address given by our beloved President on the auspicious occasion of the Joint Session. Madam, this Address is not only an Address to the nation but, I think, it is in totality the policy of our Government both at home and abroad.

Madam, our country is really out of a deep crisis of drought. The President has mentioned that we are overcoming that crisis of drought Now we are waiting for the presentation of another Budget. The last surplus budget has helped the Government to overcome the crisis period due to drought and other calamities. We are waiting, Madam, for another Budget to be presented in another ten minues.

The Centenary Birth celebrations of our beloved Prime Minister, Pandit Jawaharlal Nehru, who has shown us the path towards democracy, socialism and non-alignment, were very well planned. We had the opportunity to celebrate the birth centenary of Pandit Jawaharlal Nehru and this I think is the proper time to rededicate ourselves to the dreams of Pandit Nehru. The nation also feels proud to observe the first birth centenary of our first Prime Minister, Pandit Nehru. I am glad to say, Madam, that the nation is moving on the path shown by Pandit Nehru and our beloved Prime Minister, Indiraji, who has sacrificed her life for the unity and integrity of the nation. So, this year is a evry important year for India.

Madam, the Government has decided to reduce the voting age from 21 years to 18 years. This is a landmark in the history of electoral reforms. Franchise is the plough for flowering the democracy in the country and as the youth of the country participate in elections, I feel proud of this achievement. So, I congratulate our beloved Prime Minister that with his efforts he is able to reduce the voting age from 21 years to 18 years, and by reducing the voting age, I am proud to say, Madam, that this will directly safeguard the interests of the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes, the minorities and the women.

Madam, the massive victory of our Party in the elections in the North-Eastern region is a very great achievement for democracy.

Madam, the country is facing a very grave unemployment problem. This is no doubt upsetting the youth of the country. But our Government is trying its best to provide self-employment through vocational education and also through loans from DIC and bekari graduate loans and through different schemes like NABARD, IRDP, NREP, etc.

So, Madam, along with the reduction in the voting age our Government

and our beloved Prime Minister is now working for safeguarding the interests and rights of women. About 30 per cent reservation we have already got for the development of women. This is a great achievement for our country. Men and women constitute the backbone of our country. If we are able to save the interests of women and other weaker sections of the society, it is a very great achievement for our country.

In the foreign policy sphere, Madam, our image as a non-aligned country has grown. The foundation laid by Nehruji, and solidly followed and supported by the successor Prime Minister, Indiraji and by the visits of our present Prime Minister to China and Pakistan, a new ground has been broken, which will go a long way to improve the relations with the neighbouring countries. We congratulate our beloved Prime Minister for this. I also congratulate the Prime Minister for deciding to intervene in Maladives successfully. We have also to feel proud of our approach to African affairs. Our Government has put our country in the first place in the world by recognising Namibia. We can proudly say that Pandit Nehru's tradition has been maintained and we have maintained it not only in our internal affairs but also in the world affairs.

However, at home, we need to put emphasis on education for the tribals if we want to bring about a fundamental change. For that we have to give certain relaxation in the matter of education and employment for the tribals. We have to give reservations in Navodaya Schools and Central Schools to the Tribals to bring them up. As a woman, I would like to say that for women's education, Mahatma Gandhi had said that if man is educated, an individual is educated but if a woman is educated, the whole family is educated. So, if we want upliftment of tribals particularly those who live in slum areas, we have to give more stress on their education.

We must also share the concern of our beloved President on the issue of terrorism. Terrorism is a national tragedy. Although the Government is making all efforts to combat this evil, the problem has resulted in a lot of bloodshed. This is a matter which concerns all of us belonging to all parties and we have to fight it out. If we remain partisan, we with repent; the whole nation will have to repent. Therefore, I appeal, through you, to all parties to raise their hands against terrorism. This is th appeal made by our President in his Address and I would appeal through you, to all parties to consider over this matter. This is not a problem of he Congress Party alone; this is not a problem of our Prime Minister alone; this is a problem of the whole nation. That is why I request all parties to join bands and fight against terrorism unitedly. I think if we are united on this issue and decide to fight against terrorism unitedly. we will definitely succeed.

With these submissions, I conclude. I am thankful to you, Madam, for giving me this opportunity to say something on the Motion of Thanks on the President's Address which was moved by Shri Sukul. Thank you.

डा० वह प्रताप सिंह (उत्तर प्रदेश) : आदरणीय उपसभापति महोदया, आपका मैं हृदय से आभारी हूं जो आपने मुझको राष्ट्रपति के अभिभाषण पर श्री पशुपति नाथ सुकुल द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद के प्रस्ताव पर चल रही चर्चा पर मुझको भी अपने विचारों को प्रकट करने का अवसर प्रदान किया है । मैं इसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं ।

(श्री रूद्र प्रताप सिंह)

मैं कम से कम समय में अधिक से अधिक बातें करने का प्रयास करूंगा ।

महोदया, महात्मा गाँधी और भारत के महान सपूतों ने भारत को लोकतन्त्र समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता तथा गुटनिरपेक्षता के आधार स्तम्भों पर खड़ा किया है । राष्ट्र की सेवा में समर्पित चार पीढ़ियां पण्डित मोती लाल नेहरू, पंडित जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गाँधी तथा श्री राजीव गाँधी जी ने इन स्तम्भों को शक्तिशाली बनाने में ऐतिहासिक योगदान दिया है । भारत के स्वाधीनता आन्दोलन से लेकर वर्तमान वर्ष तक कोई भी परिवार राष्ट्र की सेवा तथा बलिदान में इस परिवार की समता नहीं कर सकता है । पंडित मोती लाल नेहरू ने स्वाधीनता आन्दोलन के वृक्ष का बीजारोपण किया । पंडित जवाहर लाल नेहरू ने उसे सींचा और बड़ा किया । श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने उसका पालन पोषण करके उसे शक्तिशाली बनाया । उसमें पुष्प आए तथा उसकी सुगन्ध भी सम्पूर्ण भारत तथा विश्व में फैली । हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री आदरणीय श्री राजीव गाँधी उस वृक्ष की रक्षा कर रहे हैं जिससे उसके अमृत फलों का आनन्द भारत तथा विश्व की मानव जाति को प्राप्त होता रहे । महोदया, माननीय सदन को स्मरण होगा कि उन्हें भारत के प्रधानमन्त्री बनने की कोई कामना या लालसा नहीं थी । जब कांग्रेस दल के द्वारा उन से प्रार्थना की गई तब उन्होंने इस कार्यभार को स्वीकार किया था साथ ही उनके महान चरित्र तथा स्वभाव से संतुष्ट हो कर उनके नेतृत्व को 1985 के साधारण निर्वाचन में कांग्रेस दल को एक प्रचण्ड बहुमत एक ऐतिहासिक बहुमत प्रदान किया था । विश्व के किसी भी प्रधान मन्त्री को इतना बहुमत प्राप्त नहीं हुआ है । यह उनकी लोकप्रियता का एक प्रमाणिक उदाहरण हैं । सत्ता में आते ही उन्होंने लोकतन्त्र, समाजवाद, धर्म निरपेक्षता तथा गुटनिरपेक्षता की नीति को क्रियान्वित करने का प्रयास किया है । महोदया, माननीय सदन को स्मरण होगा कि सत्ता में आते ही उन्होंने लोक तन्त्र के कलंक दल-बदल पर नियन्त्रण करने के हेतु दल-बदल विधेयक प्रस्तुत किया था । साथ ही इन पांच वर्षों में उन्होंने इस बात की कभी चिन्ता नहीं की है कि प्रदेश के निर्वाचन में उनका दल पराजित हो सकता है । जब भी समय आया उन्होंने विधान सभाओं का निर्वाचन करा कर लोकतन्त्र को पल्लिवत एवं पुष्पित किया है । उन्होंने लोकतन्त्र तथा देश को दल से ऊपर रखा है । अभी उन्होंने जिला परिषदों तथा ग्राम पंचायतों को जो अधिकार प्राप्त करने की बात कही है तथा जो प्रशासन का विकेन्द्रीकरण करना चाहते हैं यह सब इस बात के प्रमाण हैं कि वह लोकतन्त्र को अधिक शक्तिशाली तथा प्रभादी बनाना चाहते है । वे सदा विपक्ष का समुचित आदर करते है । जिन प्रदेशों में विपक्षी दलों की सरकारें हैं उनके साथ भी कभी भेदभाव नहीं करते हैं । ग्राम पंचायतों की ओर उनका ध्यान जाना इस बात का प्रतीक है वे महात्मा गाँधी की कल्पना को साकार करना चाहते हैं । अपने दल में भी वह लोकतान्त्रिक मूल्यों को महत्व प्रदान करते हैं । मुझे आशा है कि उनके नेतृत्व में भारत में लोकतन्त्र सुदृढ़ होगा । महोदया, पंडित नेहरू तथा श्रीमती इन्दिरा गांधी की भान्ति श्री राजीव गाँधी के भी हृदय में निर्धन निर्बल शोषित तथा सर्वहारा वर्ग के प्रति पीड़ा तथा करुणा है । अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों को संविधान में जो अधिकार प्राप्त है वे चाहते है कि व्यवहार में भी वह लाभ उनको प्राप्त हो । पिछड़ा वर्ग जिसमें अधिकतर मजदूर वर्ग है उनकी भी निर्धनता की ओर उनका ध्यान है । किस जाति को या किस वर्ग को क्या लाभ प्राप्त होना चाहिए इस पर विचार करते समय उनका ध्यान निर्धन वर्ग की ओर अधिक जाता है । यही दृष्टिकोण सही दृष्टिकोण है और इसी दृष्टिकोण से देश की असमानता और विषमता समाप्त होगी और देश को निर्धनता और बेरोजगारी को दूर करना चाहते हैं तथा इस दिशा में

निरन्तर सुधार हो रहा है । यह प्रसन्नता की बात है कि उनके कार्यकाल में देश प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो रहा है। सार्वजनिक क्षेत्रों में भी लाभ दिखाई पड़ने लगा है । मेरा विश्वास है कि वह अमीरी के आकाश को झुकाएंगे और गरीबी की धरा को उठायेंगे क्योंकि वह सही अर्थों में समाजवादी है । महिलाओं को समानता का अधिकार प्रदान कराने का प्रयास समाजवाद की दिशा में एक महान कदम है । महोदया, भारत के प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गांधी जी धर्म-निरपेक्षता के साकार रूप हैं । मुझे एक कथा का स्मरण हो रहा है । एक महात्मा थे जो नदी में डूबते बिच्छु को बचाते थे और बिच्छु उनके हाथ में डंक मार देता था । महात्मा उसको बार-बार उठाते थे बिच्छु बार-बार डंक मारता था । किसी ने पूछा कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं तो महात्मा बोले जब वह अपना स्वाभाव डंक मारना नहीं छोड़ता तब अपना स्वभाव कैसे छोड़ सकता हूं इसे बचाना । हमारे भारत के समस्त सम्प्रदाय इस बात को स्वीकार करते हैं कि श्री राजीव गाँधी एक महान धर्म-निरपेक्ष व्यक्ति है तथा उनके नेतृत्व में कांग्रेस की नीति सदा ही धर्म-निरपेक्षता की रहेगी जिसे रहना भी चाहिये। महोदया मैं यह कहना चाहूंगा कि भारत की कोटि-कोटि जनता की आशाओं एवं विश्वास की केन्द्र श्री राजीव गाँधी की विदेश यात्राओं से जिन-जिन देशों के साथ हमारे मतभेद रहे हैं जैसे चीन और पाकिस्तान वह कम होंगे, यह आशा बन्धी है । जिन देशों के साथ हमारे मधुर सम्बन्ध थे वे अधिक प्रगाढ़ हुए हैं। श्री राजीव गाँधी के नेतृत्व में गुट-निरपेक्ष आन्दोलन सक्रिय एवं शक्ति-शाली हुआ है अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज में भारत रूपी सूर्य का उदय हुआ है और गुटनिरपेक्षता का प्रकाश विश्व में फैल रहा है । श्री राजीव गाँधी जी के शरीर की प्रत्येक सांस, हृदय की प्रत्येक धड़कन भारत की अखण्डता, एकता तथा प्रभुसत्ता के लिए समर्पित है। उनके नेतृत्व में भारत पुनः जगत के गुरु का नेतृत्व प्राप्त करेगा । महोदया, उनका यह कार्यकाल स्वाधीन भारत के इतिहास में स्वर्णिम युग होगा । जो राजीव गाँधी के युग के नाम से स्मरण किया जायेगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं धन्यवाद के प्रस्ताव का हृदय से समर्थन करता हूं और आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया । धन्यवाद ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have an announcement to make. I have to inform Members that as per intimation received, the Finance Minister's Budget Speech in the Lok Sabha will be over at about 6.40 P.M. today; Accordingly, the Budget statement in this House will be laid at 6.45 P.M. instead of 6.0 P.M. as mentioned in today's agenda.

The House is adjourned till 6.45 P.M. today.

The House then adjourned at fifty-one minutes past four of the clock.

The House reassembled at forty-five minutes past six of the clock. The **Deputy Chairman** in the Chair.

THE BUDGET (GENERAL), 1989-90.

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI S. B. CHAVAN): Madam Deputy Chairman, I beg to lay on the Table a statement (in English and Hindi) of the estimated receipts and expenditure of the Government of India for the year 1989-90.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House stands adjourned till 11.00 a.m. tomorrow.

The House then adjourned at forty-six minutes past six of the clock till eleven of the clock on Wednesday, the 1st March, 1989.